Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا

(सूरः बनी ईसराइल : 106)
अनुवाद : और हम ने सत्य के साथ इसे उतारा है और सच्ची आवश्यकता के साथ यह उतरा है। और हमने तुझे नहीं भेजा परंतु एक शुभ समचार देने वाला और एक सावधान करने वाले के रूप में।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-41

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

26 रबीउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 12 ईखा 1402 हिज्री शम्सी, 12 अक्टूबर 2023 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मज़लूम की बद्दुआ से बचो

दाईं ओर को प्राथमिकता

(2451) हज़रत सहल बिन साद साउदी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई पीने की चीज़ दी गई तो आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस में से पिया और आपके दाहिनी ओर एक लड़का और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाईं और वृद्ध लोग थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस लड़के से पूछा : क्या तुम मुझे इजाज़त देते हो कि मैं यह उनको दे दूं? उस लड़के ने कहा : कि अल्लाह की क़सम! नहीं। हे रसूलुल्लाह! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो हिस्सा मुझे मिला है वह तो मैं अपने आप को छोड़ कर किसी और को देने का नहीं। कहते थे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस के हाथ में वह (पयाला) रख दिया।

उस व्यक्ति का गुनाह जो किसी ज़मीन से नाजायज़ तौर से कुछ ले

(2452) हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे जिस शख़्स ने किसी ज़मीन से नाजायज़ तौर पर कुछ ले लिया तो वह सात ज़मीनें बन कर उसके गले का तौक़ होगा।
(सही बुख़ारी, भाग 4, किताब अल् मज़ालिम, प्रकाशन 2008 कादियान)

★ ★ ★

अख़लाक़-ए-फाज़िला हासिल करो कि नेकियों की चाबी अख़लाक़ ही हैं
सब इज़्ज़तों से बढ़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त है जिस का समस्त इस्लामी दुनिया पर प्रभाव है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

आँहज़रत सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम की बुलंद शान

सब इज़्ज़तों से बढ़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त है। जिसका समस्त इस्लामी दुनिया पर प्रभाव है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही की ग़ैरत ने फिर दुनिया को ज़िंदा किया। अरब जिन में व्यभिचार, शराब और जंगजूई के सिवा कुछ रहा ही नहीं था और हक़ूकुल ईबाद का ख़ून हो चुका था। हमदर्दी और भलाई समस्त इन्सानो का नामोनिशान तक मिट चुका था और न सिर्फ हुक़ूकुल-ईबाद ही तबाह हो चुके थे बल्कि हक़ूकुल्लाह पर इस से भी ज़्यादा अंधकार छा गया था। अल्लाह तआला की सिफ़ात पत्थरों, बूटियों और सितारों को दी गई थीं। भिन्न भिन्न प्रकार का शिर्क फैला हुआ था। विनीत इन्सान और इन्सान की शर्मगाहों तक की पूजा दुनिया में हो रही थी। ऐसी हालत-ए-मकरूह का नक़्शा अगर ज़रा देर के लिए एक सलीमुल फ़ितरत इन्सान के सामने आ जाए तो वह एक ख़तरनाक ज़ुल्मत और ज़ुलम और अत्याचार के भयानक और ख़ौफ़नाक नज़ारा को देखेगा। फ़ालिज (लकवा) एक तरफ़ गिरता है, परंतु यह फ़ालिज ऐसा फ़ालिज था कि दोनों तरफ़ गिरा था। फ़साद कामिल दुनिया में बरपा हो चुका था। पृथ्वी में अमन-ओ-सलामती नहीं थी और न समुद्र में सुकून और राहत। अब इस अंधकार और हलाकत के ज़माना में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आकर कैसे कामिल तौर पर इस मीज़ान के दोनों पहलू दरुस्त फ़रमाए कि हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद को अपने असली मर्कज़ पर क़ायम कर दिखाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अख़लाक़ी ताक़त का कमाल उस वक़्त ज़हन में आ सकता है जबकि इस ज़माना की हालत पर निगाह की जाए। मुख़ालेफ़ों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुयायियों को जिस क़दर तकालीफ़ पहुंचाई और इसके बिल्मुक़ाबिल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसी हालत में जब कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पूरा इक़तेदार और इख़तेयार हासिल था, उनसे जो कुछ सुलूक किया, वह आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊंची शान को ज़ाहिर करता है।

अबु जहल और उसके दूसरे रफ़ीक़ों ने कौन सी तकलीफ़ थी जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जांनिसार खादिमों को नहीं दी। ग़रीब मुस्लमान औरतों को ऊंटों से बांध कर विपरीत सिमतों में दौड़ाया और वे चीरी जाती थीं। केवल इस गुनाह पर कि वह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की क्यों क़ायल हुईं। परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके मुक़ाबिल सब्रो बर्दा-श्त से काम लिया। और जबकि मक्का फ़तह हुआ, तो لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ (यूसुफ़ : 93) कह कर माफ़ फ़रमाया। ये किस क़दर अख़लाक़ी कमाल है। जो किसी दूसरे नबी में नहीं पाया जाता। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

ग़रज़ बात यह है कि अख़लाक़-ए-फाज़िला हासिल करो कि नेकियों की चाबी अख़लाक़ ही हैं।
(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 484 प्रकाशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

अफ़सोस मुस्लमानोंने यूरोपीयन अक़्वाम के मुक़ाबला पर बार-बार जिहाद के ऐलानात कर के इस्लाम के रोब को मिटा दिया
जिन ख़ैर-ख़्वाहों ने उनको इस किस्म की बातों से रोका उनको इस्लाम का दुश्मन क़रार दिया।
और यह न समझे कि जो क़ुरआन-ए-करीम की तालीम की तरफ़ बुलाते हैं वह इस्लाम के दुश्मन नहीं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत कहफ की आयत 24-25 وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ○ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ○ ك की तफ़सीर में फ़रमाते हैं

इस आयत में फिर उस क़ौम की तरक़्क़ी के ज़माना के मुताल्लिक़ एक ख़बर दी है और वह यह कि इस क़ौम के मुक़ाबला पर दावा न करना और यह न कहना कि बस हम कल उनको तबाह कर देंगे सिवाए इसके कि अल्लाह ताआला तुमको उनके मुताल्लिक़ कोई ख़बर दे अर्थात इलहाम से बताए कि उनसे अब अमुक सुलूक होने वाला है।

कुछ लोगों ने इस आयत के ये माने किए हैं कि हे मुहम्मद रसूलुल्लाह कोई बात बग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰهُ के न कहा करो और उस हुक्म के मुताल्लिक़ बाअज़ निहायत अफ़सोसनाक रिवायात नक़ल की हैं जिन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्पष्ट अपमान है। हालाँकि आयत के शब्द साफ़ बता रहे हैं कि यहां इन शा अल्लाह कहने का कोई वर्णन नहीं।

पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

इस बात पर जमाअत जर्मनी को अल्लाह तआला का बहुत शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उस ने इस जलसे की वजह से इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को लोगों पर ज़ाहिर करने की तौफ़ीक़ दी

जमात अहमदिया जर्मनी का जलसा पिछले हफ़्ता सफली से आयोजित हुआ, अतः सबसे पहले तो हमें अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसने हमें एक वक़फ़े के बाद

बड़े पैमाने पर आम हालात के मुताबिक़ जलसा आयोजित करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, इस पर सब इंतेज़ामिया को भी और जलसे में शामिल होने वालों को भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए

जहां-जहां मेहमानों को तकलीफ़ हुई है वहां जलसे की इंतेज़ामिया के आफ़िसरान भी ज़िम्मेदार हैं
और अमीर साहिब को इस बात को खासतौर पर नोट करना चाहिए, देखना चाहिए, क्योंकि यह उनकी ज़िम्मेदारी भी है

बाक़ी इंतेज़ामी मुआमलों में तो कमियां बर्दाश्त हो जाती हैं लेकिन जलसा सुनने के इंतेज़ामात में कोई कमी बर्दाश्त नहीं हो सकती

मैंने यही देखा है कि जहां अफ़्सर आजिज़ी से और मेहनत से काम करने वाला हों वे तमाम विभाग बेहतर होता है

हर ख़ादिम, हर नासिर और लजना की हर मैंबर का मैं शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने अपनी तरफ़ से बहुत मेहनत की लेकिन आफ़िसरान को अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए

तरक़्क़ी करने वाली कौमें अपनी कमज़ोरियों पर नज़र रखें तो तभी सफल होती हैं

निसंदेह इस तक़रीब ने मुझे रुहानी तौर पर बहाल किया, समस्त तंज़ीमें, मर्द, औरतें यहां तक कि बच्चे भी मुनज़्ज़म थे

मुझे इन दिनों जमात अहमदिया के मुताल्लिक़ बहुत सी दिलचस्प चीज़ें सीखने को मिलीं उदाहरणतः रवादारी और दूसरों को बावजूद इख़तेला-फ़ात के क़बूल करना (डाक्टर वीरोनीका सतूली लोवा)

ख़लीफ़-ए-वक़्त के मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर खिताबात ने मुझे प्रभावित किया, मक़दूनिया के एक पत्रकार होने की हैसियत से
मुझे जलसे पर बहुत से अहमदी मुस्लमानों से बात करने की तौफ़ीक़ मिली, जिन्होंने हमेशा मुस्कुराहट के साथ मुझसे बात की

मैं जलसे की सफ़ाई और तमाम तंज़ीम से बहुत प्रभावित हूँ, आपका माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं वाक़ई तौर पर दिखाई दिया और इसी माटो से अमन हो सकता है (सीनादरा सीमोवों साहिब)

इस पूरे जलसे ने मेरे दिल पर एक गहरा प्रभाव डाला और विशेषता बैअत और नमाज़ के दौरान में अपने जज़बात पर क़ाबू नहीं पा सकी, पूरी बैअत की तक़रीब के दौरान रोती रही

इस लम्हे को मैं ज़िंदगी-भर नहीं भूलूँगी कि किस तरह समस्त अहमदी ख़लीफ़ा के हाथ पर एक जान हो कर बैअत में शामिल हुए (मार्टीना साहिबा अज़ सिलवाकिया)

जलसा में शामिल हो कर मुझे इस्लाम की तालीम, अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के असल मुक़ाम का परिचय हासिल हुआ और यह भी पता लगा कि इस्लाम दरअसल एक अम्न पसंद मज़हब है (उंडरसका अज़ सिलवाकिया)

यहां जलसे में मैं ने इस्लाम देखा है, दूसरे मुस्लमानों से आपके पास वाज़िह फ़र्क़ ख़िलाफ़त है और उसकी वजह से आपके पास एकता भी है (प्रोफ़ैसर डाक्टर रजीप शकोरती साहिब)

मेरे ज़हन में एक अहम बात नक़्श कर गई है कि जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा ने क़लमी जिहाद का विचार हमारे सामने रखा जिसकी मैं सौ फ़ीसद तसदीक़ करती हूँ (लिया साहिबा अज़ जॉर्जिया)

मैं ने ख़लीफ़ा के खिताबात को ग़ौर से सुना और इस नतीजा पर पहुंचा हूँ कि आप लोगों को काफ़िर कहना बिल्कुल ग़लत है, आप भी दूसरे फ़िर्क़ों की तरह इस्लाम का एक फ़िर्क़ा हैं (मिस्टर वैसल जॉर्जिया)

मेरे लिए जलसा सालाना इलम की दुनिया में एक ऐसा बाग़ है जो सहयोग और भाई चारे को फ़रोग़ देता है और इस के साथ ही यह एक ऐसा अवसर था जहां आपकी कम्यूनिटी के काम और

नियमित कोशिशों को दिखाया गया कि किस तरह जमात अहमदिया समाज को फ़ायदा पहुंचाने की ख़ातिर मंसूबे बना रही है और इक़दामात

कर रही है (ऊनी जशारी साहिब अज़ कोसोवो)

मैं ने जलसे को बहुत ग़ौर से सुना और लोगों को देखा और जमात अहमदिया के इन विशेषताओं का वर्णन करूँगा जो कि अब दीगर दीनी जमाअतों में ख़त्म हो रहे हैं और वह अहमदियों के आला अख़लाक़ हैं (आरज़ू करीम साहिब अज़ ताजिकस्तान)

जलसे के दूसरे ही दिन अहमदियत की सदाक़त मेरे दिल में घर कर गई, मैंने बैअत करने का इरादा कर लिया और अल्लाह तआला ने मुझे उसकी तौफ़ीक़ दी (मुहम्मद अली साहिब)

मेरे लिए बड़ी हैरानगी की बात है कि जलसा सालाना में मुख़्तलिफ़ रंगों के लोग सब ख़ुशी से मिले और आपस में सब एक फ़ैमिली के अफ़राद की तरह प्यार-ओ-मुहब्बत से मिले और तीन दिनों में मुझे किसी किस्म का कोई झगड़ा नज़र नहीं आया (दोवाला कैमरोन के इमाम)

इमाम जमात ने ऐसी तालीम पेश की कि हर मुस्लमान को अपने दीन पर गर्व करना चाहिए, हम सबको अमली तौर पर इस तालीम को पूरी दुनिया के सामने पेश करना चाहिए (दोवाला, कैमरोन के चीफ़ इमाम)

जमात अहमदिया जर्मनी को जलसा सालाना के हवाले से कुछ नसाएह, जलसे पर तशरीफ़ लाने वाले मेहमानों के तास्सुरात, तथा मीडीया कवरेज का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 08 सितंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला का बेहद फ़ज़ल और एहसान है कि जमात अहमदिया जर्मनी का जलसा पिछले हफ़्ता सफलता से आयोजित हुआ। अतः सबसे पहले तो हमें अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसने हमें एक वक़फ़ा के बाद बड़े पैमाने पर आम हालात के मुताबिक़ जलसा आयोजित करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

इस पर सब इंतेज़ामिया को भी और जलसे में शामिल होने वालों को भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए।

कारकुनों को इस बात पर खासतौर पर अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसने उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत की तौफ़ीक़ दी। इसी तरह शामिल होने वालों को भी इन कारकुनों का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उन्होंने जलसे के दिनों में उनकी ख़िदमत की कोशिश की। इस बड़े इंतेज़ाम में और नई जगह में बहुत सी कमियां रह गई होंगी बल्कि रहें और कुछ लिहाज़ से कुछ मेहमानों को तकलीफ़ भी बर्दाश्त करनी पड़ी होगी और बाअज़ बातें जो मुझे पहुंची हैं, तकलीफ़ें हुईं भी, लेकिन क्योंकि दीनी उद्देश्य के लिए आए थे इसलिए उमूमन मेहमानों ने कोई शिकवे-शिकायत नहीं किया लेकिन मेरे पता करने पर मुझे पता चला है कि बाअज़ इंतेज़ामात सही नहीं थे। कुछ तो मैं ने ख़ुद महसूस किए। जहां तक कारकुनों का ताल्लुक़ है उन्होंने तो उमूमन बड़ी मेहनत से अपने फ़रायज़ अंजाम दिए। स्वयं सेवक हैं या दूसरे कारकुन हैं, जहां उनकी तरफ़ से कोई कमज़ोरियाँ ज़ाहिर हुईं या उस विभाग में कोई कमज़ोरी ज़ाहिर हुई तो वह उमूमन उनके आफ़िसरान की ग़लत हिदायात की वजह से हुई हैं। इसलिए जहां-जहां मेहमानों को तकलीफ़ हुई है वहां जलसे की इंतेज़ामिया के आफ़सरान भी ज़िम्मेदार हैं और अमीर साहिब को इस बात को खासतौर पर नोट करना चाहिए, देखना चाहिए, क्योंकि यह उनकी ज़िम्मेदारी भी है। उनको अस्तग़फ़ार करना चाहिए और आइन्दा के लिए अपनी कमियों को अपनी सुर्ख़ किताब में लिख कर इस्लाह की कोशिश करनी चाहिए। यह भी देखना चाहिए कि इस जगह पर आइन्दा वह बेहतर इंतेज़ाम कर भी सकते हैं कि नहीं या कहीं और इंतेज़ाम किया जाए।

उमूमी तौर पर कुछ मुश्किलात का कई दफ़ा सामना करना पड़ा जो ये हैं। किसी ने मुझे लिखा कि एस्केलेटर (escalator) ख़राब थे, ऊपर नीचे जाने में दिक्क़त पैदा हुई। लिफ़्ट काम नहीं कर रही थी, इस से दिक़्क़त पैदा हुई। रिहाइश तो दे दी लेकिन ग़ुस्ल-ख़ाने की बहुत कमी थी या पानी का इंतेज़ाम सही नहीं था। कार्ल्सरोए में जब उन्होंने जगह ली थी तो वहां शुरू में ये लोग मुझे लेकर गए थे और मैंने यह देखा था और वहां उन्हें तवज्जा दिलाई थी कि ग़ुसल ख़ानों और पानी का इंतेज़ाम भी सही होना चाहिए। इसी तरह आवाज़ को मैंने वहां मुख़्तलिफ़ जगहों पर खड़े होके चैक किया था और वे हाल छोटे भी थे लेकिन इस के बावजूद वहां कमी नज़र आ रही थी जिसको हल करने की कोशिश की गई और कुछ हद तक हल कर लिया गया लेकिन यहां इस बात को सही तरह से देखा नहीं गया। मुझे इस दफ़ा उस जगह की तफ़सील तो उन्होंने नहीं बताई थी, बस तारीफ़ी रिपोर्टस भिजवाते रहे कि यह बहुत अच्छी जगह है। इसी तरह बाअज़ दफ़ा आफ़सरान की ग़लत हिदायात की वजह से सैक्यो-रिटी वाले बिला-वजह कुछ रोकें डालते रहे। उमूमी तौर पर तो उन्होंने अच्छा काम किया है लेकिन बाअज़ जगह इन्फ़िरादी तौर पर ऐसी बातें हुईं और इसी वजह से लजना को शिकायत है कि वहां लजना की तरफ़ खाना पहुंचाने में भी दिक्क़त पैदा होती रही।

सैक्योरिटी वालों को भी याद रखना चाहिए कि उनका काम सिर्फ रोकना नहीं बल्कि राहनुमाई करना भी है और इस विभाग की एक ऐसी टीम होनी चाहिए जो मेहमानों को सहूलत से निर्धरित जगह पर पहुंचाए और उन के लिए सहूलयात मुहय्या करे।

इसी तरह ट्रांसलेशन के बारे में लजना की तरफ़ से पहले दिन दिक्क़त का सामना करने की रिपोर्ट मिली और ये मुझे लजना ने नहीं बताया बल्कि हमारे एम.टी.ए के ट्रांसलेशन के विभाग ने बताया है कि सही तरह ट्रांसलेशन नहीं होती रही। बाद में बाहर से आई हुई बाअज़ मेहमानों ने शिकवा किया कि ट्रांसलेशन न होने की वजह से हम ख़ुतबा नहीं सुन सके। आवाज़ का मसला मर्दाना हाल में खासतौर पर रहा और इस के लिए मैं जलसा के दौरान भी इंतेज़ामीया को तवज्जा दिलाता रहा हूँ। अफ़्सर जलसा सालाना और अफ़्सर जलसा गाह और आवाज़ के विभाग के इंचार्ज जो लोग हैं ये उस के ज़िम्मेदार हैं। लोग यहां जलसा सुनने आते हैं। अगर उनको उस के सुनाने का सही इंतेज़ाम नहीं तो फिर जलसे का फ़ायदा क्या है बाक़ी इंतेज़ामी मुआमलों मैं तो कमियां बर्दाश्त हो जाती हैं लेकिन जलसा सुनने के इंतेज़ामात में कोई कमी बर्दा-श्त नहीं हो सकती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम ने फ़रमाया है कि यह कोई मेला नहीं है। (उद्धृत शहादतुल क़ुरआन, रोहनी ख़ज़ायन, भाग 6, भाग 395) जहां लोग जमा हो जाएं और न मेरा उद्देश्य लोगों को इस तरह इकट्ठा करना है कि लोगों को अपनी बरतरी बताऊं। लेकिन आवाज़ न आने की वजह से बाअज़ जगह पीछे मेले वाला हाल था। कुछ लोगों ने इस की वीडीयो बना ली, मैंने देखी हैं। कोई जलसे का माहौल नज़र नहीं आ रहा था। मेरे अंदाज़े के मुताबिक़ कम से कम सात आठ हज़ार अफ़राद ऐसे होंगे जिन्हों ने जलसा सही नहीं सुना। इंतेज़ामीया लोगों को इस का

ज़िम्मेदार क़रार देती है कि बातें कर रहे थे लेकिन मेरे नज़दीक अफ़्सर जलसा गाह और साऊँड सिस्टम वाले और तर्बीयत वाले इसके ज़िम्मेदार हैं और उनको इस बात पर ग़ौर करना चाहिए। मुझे तो यह हालत देखकर शर्म आई, उम्मीद है उनको शर्म आई होगी। अगर लोग बातें कर रहे थे तो फिर भी तर्बीयत की कमी है और मिशनरी इंचार्ज और मुरब्बियान इसके ज़िम्मेदार हैं कि वे क्यों सारा साल तर्बीयत नहीं करते औ रलोगों में मजालिस के तक़द्दुस का ख़्याल पैदा नहीं करते। लोगों पर इल्ज़ाम न दें।

अहमदी को तो अगर तवज्जा दिलाई जाए तो उमूमन मुसबत रद्देमल दिखाता है और ये लोग तो जलसा पर आए थे और यह हो नहीं सकता कि अगर तवज्जा दिलाई जाती तो फ़ौरन इस्लाह नहीं होती। बहरहाल अपने नुक़्स थे जिसके नतीजा में दूसरे नुक़्स पैदा हुए

मैंने यही देखा है कि जहां अफ़्सर आजिज़ी से और मेहनत से काम करने वाला हो वे समस्त विभाग बेहतर होता है अन्यथा अगर आम कारकुन अच्छा काम करना भी चाहे तो आफ़सरान की वजह से सही काम नहीं कर सकते। इसलिए मुझे कारकुनों से शिकवा नहीं है। हर ख़ादिम, हर नासिर और लजना की हर मैंबर का मैं शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने अपनी तरफ़ से बहुत मेहनत की लेकिन आफ़सरान को अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए।

मैंने पहले भी वर्णन किया था कि इस दफ़ा औरतों में डिसिप्लिन मर्दों की निसबत कुछ बेहतर मुझे नज़र आया है जिससे ज़ाहिर होता है कि मर्दों के विभाग तर्बीयत को अपनी फ़िक्र करनी चाहिए।

तरक़्क़ी करने वाली कौमें अपनी कमज़ोरियों पर नज़र रखें तो तभी सफल होती हैं। "सब अच्छा है यह कह कर अपनी तरक़्क़ी के रास्ते बंद न करें और न इस में कोई शर्म की बात है। अल्लाह तआला विभाग के आफ़सरान को अपनी इस्लाह की तौफ़ीक़ दे

बहरहाल इन सब कमज़ोरियों के बावजूद अल्लाह तआला का यह हम पर एहसान है कि उसने हमारी पर्दापोशी फ़रमाई और यहां आए हुए ग़ैर अज़ जअमात मेहमानों ने उमूमन जलसे का बड़ा अच्छा असर लिया है और अगर जलसा मैंने कहा सफल हुआ तो इस वजह से हुआ कि अल्लाह तआला की पर्दापोशी ने बहुत ज़्यादा काम किया और इतने ग़ैरमामूली तास्सुरात उन लोगों ने दिए

इसी तरह दुनिया में जहां एम.टी.ए के ज़रीये से जलसा दिखाया गया था उन्होंने भी जलसे की उमूमी रंग में तारीफ़ की है। इस वक़्त मैं कुछ मेहमानों के तास्सुरात भी आपके सामने रखूँगा। बड़े अच्छे ख़्यालात का उमूमन इज़हार है। अतः इस बात पर जमाअत जर्मनी को अल्लाह तआला का बहुत शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसने इस जलसे की वजह से इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को लोगों पर ज़ाहिर करने की तौफ़ीक़ दी।

बलग़ारिया से आने वाली ईसाई महिला डाक्टर वीरोनीका सतोई लोवा (Veronika Stoilova) जो वकील और यूनीवर्सिटी लेक्चरर हैं, पी. एच. डी डाक्टर हैं कहती हैं कि ऐसा बेहतरीन मुनज़्ज़म जलसा आयोजित किया गया। जो चेहरा भी मैंने देखा किसी पर घबराहट या ग़ुस्सा नहीं पाया। समस्त लोग बहुत मुख़लिस और हर तरह हर वक़त मदद करने को तैयार नज़र आते। हर शख़्स अपनी हालत पर शुक्रगुज़ार था। निसंदेह इस तक़रीब ने मुझे रुहानी तौर पर बहाल किया। समस्त तंज़ीमें, मर्द, औरतें यहां तक कि बच्चे भी मुनज़्ज़म थे। मुझे इन दिनों जमाअत अहमदिया के मुताल्लिक़ बहुत सी दिलचस्प चीज़ें सीखने को मिलीं उदाहरणतः रवादारी और दूसरों को बावजूद इख़तेलाफ़ात के क़बूल करना। मैं निसंदेह इस बात से बहुत प्रभावित हूँ कि बर्लिन की मस्जिद औरतों ने अपने ज़ेवरों और पैसों से बनाई। औरतों का इंतेज़ाम भी मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं बहुत से दूसरे जलसों में जाती हूँ परंतु मैं यह कह सकती हूँ कि यह बात मैंने कहीं और नहीं देखी। ऐसी मिसाल बहुत कम कोई क़ायम कर सकेगा। फिर मेरी तक़ारीर के बारे में उन्होंने कहा कि रूहानियत, इन्सानियत और अमन के ख़्यालात ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मेरा मानना है कि हम सबसे पहले इन्सान हैं, फिर मुल्क के शहरी और फिर मज़हबी बिरादरी का हिस्सा हैं। हमें अपने दरमयान मुशतर्का चीज़ों को तलाश करना चाहिए न कि इख़तेलाफ़ात को जो हमें अलग करें।

फिर बलग़ारिया से आने वाली एक ईसाई महिला नतालिया साहिबा पहली दफ़ा जलसे पर आईं। कहती हैं जलसा मेरे ज़हन में नक़्श रहेगा। मैंने पहली बार हज़ारों मुस्लमानों को एक साथ इबादत करते देखा। यह निहायत ख़ूबसूरत नज़ारा था। मैं ईसाई हूँ और इस तरह के जलसे में पहली बार शामिल हुई हूँ। समस्त लोग हमसे बहुत अदब और शाइस्तगी से पेश आते जिसने एक अजीब प्रसन्नता का एहसास दिया। जलसे का इख़तेतामी हिस्सा मुझे बहुत अच्छा लगा जिसमें ख़लीफ़-ए-वक़्त की तक़रीर बहुत सबक़ आमोज़ थी। जिस चीज़ ने मुझे सबसे ज़ियाद प्रभावित क्या वह यह थी कि सब लोग हमसे ऐसे अदब से पेश आते जैसे हम बहुत ख़ास हों। डियूटी पर मौजूद लोग इस बात को यक़ीनी बनाने की पूरी कोशिश कर रहे थे कि किसी मेहमान को कोई मुश्किल न हो। फिर ये कहती हैं पहले दिन हमें अनुवाद के लिहाज़ से थोड़ा मसला महसूस हुआ। शिकायत उन्होंने बड़े ढके छिपे शब्दोंमें की है लेकिन यही था कि ख़ुतबा सुन ही नहीं सके जो कि बाद में ठीक हो गया।

फिर मक़दूनिया के एक मेहमान हैं। एक ईसाई पत्रकार लजोबिनका आजतोंव-सक़ा (Ljubinka Ajtovska) साहिबा कहती हैं कि जलसा सालाना की तंज़ीम बहुत आला सतह पर थी। यह मेरे लिए एक ख़ास सम्मान है कि मैं एक इतने बड़े और मुनज़्ज़म प्रोग्राम का हिस्सा बन सकी जिसमें मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और क़ौमों के लोगों ने शिरकत की। यह बात इस नारे की तसदीक़ है कि सिर्फ मुहब्बत ही दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकती है।

फिर मक़दूनिया से ही एक मुस्लमान पत्रकार सीनाद रसीमोव (Senad Rasimov) कहते हैं कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर ख़ुताबात ने मुझे प्रभवित किया। कहते हैं मक़दूनिया के एक पत्रकार होने की हैसियत से मुझे जलसे पर बहुत से अहमदी मुस्लमानों से बात करने की तौफ़ीक़ मिली जिन्हों ने हमेशा मुस्कुराहट के साथ मुझसे बात की। मैं जलसे की सफ़ाई और समस्त व्यव-स्था से बहुत प्रभावित हूँ। आपका माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं वाक़ई तौर पर दिखाई दिया और इसी माटो से अमन हो सकता है। सिर्फ डयूटी वाले नहीं बल्कि लोगों के व्यवहार ने भी मेहमानों को बहुत प्रभवित किया।

सलवाकिया से आने वाली एक महिला टीचर मार्टीना साहिबा कहती हैं मैं शुक्र-गुज़ार हूँ कि पहली मर्तबा जलसे में शामिल हुई हूँ। मैंने मेहमान-नवाज़ी का ऐसा मंज़र देखा है जो ग़ालिबन पूरी दुनिया में नहीं पाया जाता। हर एक ख़ुशअख़लाक़ी और एक मुस्कुराते हुए चेहरे से मिलता था। इस पूरे जलसे ने मेरे दिल पर एक गहरा असर डाला और खासतौर पर बैअत और नमाज़ के दौरान मैं अपने जज़बात पर क़ाबू नहीं पा सकी। बैअत की पूरी तक़रीब के दौरान रोती रही। इस लम्हे को मैं ज़िंदगी-भर नहीं भूलूँगी कि किस तरह समस्त अहमदी ख़लीफ़ा के हाथ पर एक जान हो कर बैअत में शामिल हुए। इसी तरह मैं अहमदियों के ख़लीफ़ा से मुलाक़ात को कभी नहीं भूलूँगी और एक दिन बाद भी मुलाक़ात का मेरे दिल पर असर है। कहती हैं कि मैं ज़रूर उनसे एक और मर्तबा मिलना चाहती हूँ (अर्थात) ख़लीफ़ वक़्त से और इस्लाम के बारे में बराह-ए-रास्त मालूमात हासिल करना चाहती हूँ। यह मुस्लमान नहीं लेकिन इन पर असर हुआ।

सलवाकिया से आने वाले एक मेहमान उंडरसका (Ondriska) साहिब, बिज़नस मैन हैं। कहते हैं जलसा सालाना से पूर्व मुझे इस्लाम के बारे में कुछ नहीं पता था। मेरी हालत यहां तक थी कि मुझे लगता था कि मुस्लमान मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपना ख़ुदा मानते हैं, नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। जलसा में शामिल हो कर मुझे इस्लाम की तालीम, अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के असल मुक़ाम का परिचय हासिल हुआ और यह भी पता लगा कि इस्लाम दरअसल एक अम्न पसंद मज़हब है और यहां पर खासतौर पर मीडीया इस्लाम के बारे में ग़लत तास्सुर पेश करता है। मेरे लिए हैरानगी है कि यह पूरा जलसे का इंतेज़ाम अहमदी ख़ुद करते हैं और कितनी लगन और कितने जोश और जज़बे के साथ मेहमानों की ख़िदमत करते हैं। कहते हैं जब मैंने ख़लीफ़-ए-वक़्त को देखा तो मेरे दिल में अमन और रूह पर मुसबत प्रभाव पड़ा। कहते हैं मेरा पुख़्ता ईमान है कि ख़ुदा तआला ने ही मुझे इस जलसे में शामिल किया।

फिर सलवाकिया से आने वाले एक मेहमान जूओदर मार्टिन (Judr Martin) साहिब (मुख़्तलिफ़ ममालिक से काफ़ी बड़े बड़े ग्रुप आए थे) कहते हैं मैंने पहली मर्तबा जलसा सालाना में शिरकत की है। मुझे अहमदियों के अख़लाक़ और मेहमान--नवाज़ी देखकर बड़ी ख़ुशी महसूस हुई है। जलसा सालाना पर मुझे बहुत बातें सीखने को मिलीं। मुस्लमान और खासतौर पर अहमदी अम्न पसंद और अपनी तालीम पर अमल करने वाले हैं। जमाअत ने जो exhibition तैयार की थी वह पसंद आई और मुझे इस्लाम और इसकी ख़ूबसूरत तालीम के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला। अहमदियों के ख़लीफ़ा के बारे में मैंने देखा कि हर अहमदी उनसे बड़ा प्यार करता है और वह भी। ऐसा भाई चारा और प्यार दुनिया में कम-नज़र आता है।

exhibition में सर्बिया और बोसनिया का जो नक़्शा बनाया गया था, उसके बारे में मेरा ख़्याल है ग़ालिबन सरबेन को शिकवा भी है कि हमारा नक़्शा सही नहीं बना।

वहां नुमाइश वालों को वह देख लेना चाहिए।

अल्बानिया के एक मेहमान प्रोफ़ैसर डाक्टर रजीप शकूरती (Rexhep Shkurti) साहिब जो फैकल्टी आफ़ नेचुरल साईंसिज़ तराना यूनीवर्सिटी (Tirana University) में प्रोफ़ैसर हैं अपनी अहलिया के साथ आए थे। कहते हैं जलसा बहुत अज़ीमुश्शान था। ये मुस्लमान हैं। कहते हैं मैं दस साल से रोज़ा रखता हूँ और इस्लाम के दूसरे अहकाम की भी तामील करता हूँ अगरचे सारे नहीं

यहां जलसे में मैं ने इस्लाम देखा है। दूसरे मुस्लमानों से आपके पास वाज़िह फ़र्क़ ख़िलाफ़त है और इस की वजह से आपके पास इत्तिहाद है।

अल्बानिया से एक मेहमान महिला अर मेरा (Ermira) साहिबा थीं जो नर्स हैं। कहती हैं इस से पहले भी जलसे पर आई थी इस बार इसी रुहानी तड़प की वजह से दुबारा जलसे पर आई हूँ। (ग़ैर भी हूँ तो एक दफ़ा आ गए तो फिर आदत पड़ जाती है) कहती हैं इस बार पहली दफ़ा मैंने नमाज़ पढ़ी है। उनकी कोई सहेली थी वह नमाज़ पढ़ती थी कहती हैं उस को देख देखकर मैं पढ़ती जाती थी। कहती हैं पहली बार मेरी रूह का हर ज़र्रा गोया हरकत में आया। सज्दे में रो-रो कर दुआएं कर रही थी और ऐसा लग रहा था कि मेरी सारी नफ़रतें पिघलती जा रही थीं। मैं दुआ करती हूँ कि अल्लाह तआला मुझे अपने ईमान पर मज़बूती अता करे और फिर मेरे से मुलाक़ात की इस का भी कहती हैं मैं बड़ी याद रखूँगी।

अतः जलसे के माहौल का असर ग़ैर भी लेते हैं। यह किस तरह हो सकता है कि अहमदी न लें? अतः जहां ओहदेदारों को अहमदियों से शिकवा होता है उनको चाहिए कि इस्लाह के सही तरीक़े इख़तेयार करें। पहले अपनी इस्लाह, अपना नमूना। फिर लोगों को समझाएँ।

अल्बानिया से आने वाली एक मेहमान महिला दरीते शुक्रती (Drite Shkurti) साहिबा हाईस्कूल की टीचर हैं। कहती हैं जलसे के इंतेज़ामात निहायत आला थे। मैं स्कूल में टीचर हूँ और जानती हूँ कि आजकल के बच्चे कितने aggressive होते हैं लेकिन यहां पर बच्चे भी इतने सुलझे हुए थे कि अपनी डयूटियों में मगन थे। (अतफ़ाल ने, बच्चों ने भी नेक नमूने दिखा के तब्लीग़ के रास्ते खोले कहती हैं मेरे लिए बहुत हैरानकुन था। छानबी मुझे जलसे के दौरान आम खाने के हाल की तरफ़ ले गया जो बाज़ार से पहले था । वहां पर भी मैंने देखा कि हज़ारों मर्द खाना खा रहे थे लेकिन कोई झगड़ा, छीना-झपटी इत्याद बिल्कुल नहीं देखी। ऐसा लगता था कि जैसे सब शहद की मक्खियां हैं जो सिर्फ काम करना जानती हैं। लोग हर काम के लिए तैयार थे और अख़लाक़ इतने आला कि थोड़ा सा भी धक्का लगता तो फ़ौरन सोरी (sorry) कहते।

अल्बानिया से आने वाले एक मेहमान जाफ़र कूची (Xhaferr Kuci) साहिब ने इकनॉमिक्स में मास्टर्ज़ किया है और चार साल की तहक़ीक़ के बाद उन्होंने बैअत भी कर ली है। कहते हैं कि जलसा उन के लिए बेहद inspiring था। बहुत positive energy दे गया है। जलसा गाह में ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ नमाज़ों में मुझे अपने आँसूओं पर इख़तेयार नहीं रहा और इस तरह बैअत की तक़रीब भी निहायत जज़बाती थी और मुझे हमेशा ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ बैठ के तहफ़्फ़ुज़ का एहसास हुआ और मुझे यही एहसास हुआ कि ख़लीफ़-ए-वक़्त ही है जो मेरे प्रिय और मुता है। कहते हैं इसके अतिरिक्त एक बात जो मुझे अच्छी नहीं लगी, वह लोगों से ताल्लुक़ रखती है। इस को भी लोगों को नोट कर लेना चाहिए। वह यह है कि जलसे में कई बार बाअज़ लोग तक़रीर के इख़तेताम से क़बल ही उठकर चले जाते थे। अतः हमें इस बात की भी फ़िक्र करनी चाहिए कि नौ मुबाईन पर मनफ़ी असर छोड़ें।

बोसेनिया से आने वाले तारीख़ के एक प्रोफ़ैसर हारिस साहिब कहते हैं। जलसा पर आने से क़बल मुझे मालूम हुआ कि वहां हज़ारों लोग होंगे और ख़लीफ़ा भी हमसे ख़िताब करेंगे। मैं कुछ ख़ौफ़ज़दा था और किसी क़दर तहफ़्फ़ुज़ात भी रखता था। हर चीज़ के बारे में शकूक-ओ-शुबहात का शिकार था। क्योंकि अहमदियों के बारे में इस क़दर वसीअ जलसा और उनके मज़हबी रसूमात के बारे में मुझे तफ़सील से इलम नहीं था और मैं बुनियादी बातों में उलझा हुआ था। फिर कहते हैं यह तो मेरी सोच थी और जब पहुंचा तो क्या हुआ कि इस से पहले मुझे इतने अच्छे लोगों में वक़्त गुज़ारने का अवसर ही कभी नहीं मिला। जलसे में हर चीज़ की मंसूबा बंदी की गई थी। सोच क्या थी, अमल क्या देखा। अच्छी मंसूबा बंदी। हर कोई अपने काम पर लगा हुआ था। अज़ीम तंज़ीम और ख़ूबसूरती से शशोभित। कहते हैं ख़लीफ़ा की पहली तक़रीर के बाद मेरा ज़हन साफ़ हो गया था। मैं लोगों का पीछा करता था कि वे कैसे बोलते और क्या कहते थे। उनका एक दूसरे से क्या ताल्लुक़ था। (तजस्सुस था, लोगों के पीछे रहे) कहते हैं मैं ये सब कुछ सुनता और देखता रहा। मैंने अपने मुस्लमान भाईयों मैं ख़ुद को महफ़ूज़ पाया। मैंने महसूस किया कि किसी ने मुझे बुरा नहीं कहा, न ही मुझे हसद या अजनबीयत की आँख से देखा या किसी बात पर मुझे तन्क़ीद का निशाना बनाया। इन समस्त बातों में जो बात मेरे लिए काबिल रशक और मुमताज़ हैसियत रखती है जिसका तजुर्बा मुझे अपनी ज़िंदगी में इस से पूर्व नहीं था वह ख़लीफ़-ए-वक़्त की मुलाक़ात थी लेकिन मुझे सुकून महसूस हुआ जैसे मेरी पीठ से कोई पत्थर गिर गया हो। मैं परेशान था परंतु अब बेफ़िकर हो गया हूँ। मैं संतुष्ट लौट रहा हूँ और निसंदेह इलम से माला-माल नए और अच्छे लोगों से माला-माल हूँ जिनसे मिला हूँ।

बोसनिया से आने वाली एक महिला इंदिरा हैदर (Indira Haidar) साहिबा जो रेडक्रास की सैक्रेटरी हैं कहती हैं। मेरे से मुलाक़ात का वर्णन कर रही हैं कि उनसे मुलाक़ात फ्रैंकफ़र्ट में हुई और बड़ी प्रसन्न रही और इसलिए कि आप अच्छी बातें करते हैं। मुझे ख़लीफ़-ए-वक़्त को सामने से सुनने का अवसर मिला। कहती हैं जमात अहमदिया और ह्यूमैनिटी फ़रस्ट मुख़्तलिफ़ दुशवारियों के बावजूद हमारे मुल्क में जिस इख़लास से ख़िदमत-ए-ख़लक़ के काम को कर रही है यहां आकर मुझे यक़ीन हो गया कि उनके रज़ाकारों में बनीनौ इन्सान की इस क़दर बेलौस ख़िदमत के जज़बा की वजह सिर्फ ख़िलाफ़त है। और हक़ीक़त भी है।

और फिर कहती हैं दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से मुख़्तलिफ़ इन्सानों को जमाअत अहमदिया ने किस क़दर वहदत की लड़ी में पिरोया हुआ है। मैंने महसूस किया कि इन समस्त बनीनौ इन्सान को एक उम्मत बनाने में और दुनिया को बेहतर बनाने की ख़ातिर अपना किरदार अदा करने के सिलसिले में इस तजुर्बे ने मुझे बाहिम्मत बनने में मेरी समझ को गहरा कर दिया है। इस अवसर ने न सिर्फ मुझे मुस्लमान होने पर फ़ख़र महसूस करने की तक़वियत बख़शी बल्कि मुझे इन्सानी हमदर्दी की कोशिशों और विश्व में होने वाली चर्चा में मज़ीद शामिल होने की तरग़ीब दी।

बोसनिया से आने वाली एक महिला मेहमान अमीना साहिबा हैं। कहती हैं रज़ाकारों की तंज़ीम बहुत अच्छी थी। महिलाओं के हिस्से में अनुवाद के मसले की वजह से हम बाअज़ प्रोग्रामों की पैरवी नहीं कर सके क्योंकि महिलाओं के हिस्से में कोई अनुवाद नहीं था। (जो मैंने शुरू में बात की इस की यह भी तसदीक़ कर रही हैं ख़लीफ़-ए-वक़्त की तक़रीर का अनुवाद मेरे लिए हमारी महिलाओं की ग्रुप लीडर ने किया। ये बात मुझे पसंद आई कि हमेशा प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए--करीम और इसके अनुवाद से होता था और कहती हैं मुझे ख़लीफ़-ए-वक़्त की नसीहत कि मुस्लमान अपने आपको ज़्यादा से ज़्यादा तालीम दें और अपने इलम को अमली जामा पहनाएं। यही एक मात्र रास्ता है जिससे उम्मत के मौजूदा हालात बदली जा सकती हैं।

दूसरे दिन फिर अनुवाद में मसला हुआ तो हमारी महिलाओं अनुवाद सुनने के लिए मर्दों के हिस्से में गईं और कहती हैं उस वक़्त (मेरा कहा कि वे महिलाओं के हिस्से में थे) बहरहाल कहती हैं कि जो औरतों का ख़िताब था वह बड़ा सहयोगी था और इस में आँहज़रत सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम के ज़माने की औरतों की मिसालें थीं जो मुझे बड़ी पसंद आएं। फिर कहती हैं इतवार के प्रोग्राम में भी बुनियादी इस्लामी उसूलों और दूसरों के हुक़ूक़ के तहफ़्फ़ुज़ के बारे में बात की। हमें हर चीज़ में बेहतर होना चाहिए उस चीज़ ने मुझ पर बड़ा प्रभाव किया और अगर हम इन्साफ़ करेंगे तभी हम तरक़्क़ी करेंगे और मुआशरे में अमन क़ायम होगा इस बारे में बताया। फिर कहती हैं ये सब बातें जो मैं ले के जा रही हूँ मेरे लिए मार्गदर्शक हैं।

जॉर्जिया से ताल्लुक़ रखने वाली एक महिला लिया (Lia) साहिबा कहती हैं मैं इस वक़्त हॉलैंड में थयालोजी (Theology) और रिलीजीस स्टडीज़ (Religious Studies) मैं मास्टर्ज़ कर रही हूँ। रहने वाली जॉर्जिया की हैं। कहती हैं पहली बार जलसा देखने को मिला। किस तरह छोटे और बड़े ख़ास जाँ-फ़िशानी से अपनी ख़िदमात पेश कर रहे हैं। आलमी बैअत को देखकर जज़बात को कंट्रोल में नहीं लाया जा रहा था। ये जलसे के आख़िरी दिन में एक वादा सबसे लिया जा रहा था कि हम इस्लाम के मुताबिक़ आइन्दा अपनी ज़िंदगी सँवारेंगे। इस बैअत से यह उन्होंने सबक़ सीखा है। कहती हैं मेरे ज़हन में एक अहम बात नक़्श कर गई है कि जमाअत अह-मदिया के ख़लीफ़ा ने क़लमी जिहाद का तसव्वुर हमारे सामने रखा जिसकी मैं सौ फ़ीसद तसदीक़ हूँ।

मुझे बहुत पसंद आया कि औरतों को भी इस्लाम तलक़ीन करता है कि वे इस्लाम की तालीम को फैलाएं। मेरा पुख़्ता ईमान है कि मुस्तक़बिल में दुनिया इस्लाम के बारे में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करेगी और उसके ज़रीया लोग अपने ख़ुदा को पहचानने वाले बनेंगे

जॉर्जिया से एक सनी स्कॉलर मिस्टर वैसल (Veisel) आए हुए थे। कहते हैं मैं जॉर्जिया में रहता हूँ। पंद्रह साल की उम्र में मैं ने ईसाइयत छोड़कर इस्लाम क़बूल

किया। इसके बाद तक़रीबन पंद्रह साल मैंने मदीना मुनव्वरा में गुज़ारे, इस्लाम का इलम और अरबी ज़बान मैंने मदीना में सीखी। मेरी पढ़ाई के दौरान मुझे आपकी जमाअत के बारे में मनफ़ी बातें सुनने को मिली थीं कि अहमदी हमें काफ़िर कहते हैं और अहमदियों का अक़ीदा ही मुख़्तलिफ़ है। कहते हैं जॉर्जिया में मैं आपकी जमाअत के मिशनरी से मिला हूँ और जमाअत अहमदिया का परिचय भी मिला है। आपने मुख़्तलिफ़ दिहात में क़ुर्बानी का गोश्त तक़सीम किया। हमसे राबता किया, मदद की। फिर उनके बारे में लिखा है कि उन्होंने जलसे पर आने से पहले जामेअतुल अज़हर से जमाअत के बारे में फ़तवे देखे कि अहमदियों के पास जा रहा हूँ, जामिआ अज़हर क्या कहती है। कहते हैं मैं ने समस्त उम्मते इस्लामिया के जमाअत के बारे में ख़्यालात को पढ़ा। समस्त फतावा देखकर मैं ने यही फ़ैसला किया कि मैं जमाअत अहमदिया को नज़दीक से देखना चाहता हूँ। लोग तो काफ़िर कहते हैं, मैं देखूं ये हैं क्या। फिर जलसे में आकर जमात को क़रीब से देखकर कहने लगे कि जमात अहमदिया यक़ीनन इस्लाम का हिस्सा है। मज़ीद कहते हैं कि मैं ने ख़लीफ़ा के खिताबात को ग़ौर से सुना और इस नतीजा पर पहुंचा हूँ कि आप लोगों को काफ़िर कहना बिल्कुल ग़लत है। आप भी दूसरे फ़िर्क़ों की तरह इस्लाम का एक भाग हैं।

कहते हैं मैं ख़लीफ़ा की बहुत क़दर करता हूँ। मेरे ज़हन में कई सवालात थे जो जलसे के तीन दिनों में मुख़्तलिफ़ नशिस्तों में हल हुए। आपकी जमाअत और आपके संस्थापक के बारे में तफ़सील से बात करने का अवसर मिला। वापस जॉर्जिया जा कर आपकी जमाअत की मुख़्तलिफ़ कुतुब का अध्ययन शुरू करूँगा। मुझे आपसे मिल के ख़ुशी हुई।

फिर कोसोवि से आने वाले मेहमान जो म्यूंसिपाल्टी आफ़ दीकान के आफ़िशल डायरेक्टर आफ़ एजूकेशन हैं। कहते हैं जलसा के दिनों में मैं ने लैक्चर सुने, बातें सीखीं मेरी याददाश्त में हमेशा नक़्श रहेंगी। मैं कोसोवि में अपने दोस्तों और साथियों को इस जलसे के हवाले से बताने के लिए बेचैन हूँ। खासतौर पर मैं ख़लीफ़-ए-वक़्त की वर्णन करदा तालीमात पर अमल करूँगा। मज़ीद बरआँ मैंने और मेरे साथियों ने जो ग़ैरमामूली और मुहब्बत से भरी हुई मेहमान-नवाज़ी का अनुभव किया वह हमारे दिलों में हमेशा रहेगा। अल्लाह आप सबको ढेरों खुशियां दे।

फिर कोसोवो से आने वाले एक मेहमान हैं औ जशारी (Avni Jashari) साहिब लपजान Lipjan म्यूंसिपल्टी के मेयर काबीना के सरबराह हैं। कहते हैं मेरे लिए ग़ैरमामूली और वाक़ई प्रभावित करने वाला अनुभव था। मैंने ख़लीफ़-ए-वक़्त के ख़ताबात और दीगर तक़ारीर को सुना और दिलचस्प और प्रभावित करने वालों का ख़ज़ाना हासिल किया जो हमेशा मेरे साथ रहेगा। कहते हैं इस बात पर-ज़ोर देना चाहता हूँ कि इस तजुर्बे ने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। कहते हैं मेरे लिए जलसा सालाना इलम की दुनिया में एक ऐसा बाग़ है जो सहयोग और भाई चारे को फ़रोग़ देता है और इस के साथ ही यह एक ऐसा अवसर था जहां आपकी कम्यूनिटी के मिसाली काम और मुसलसल कोशिशों को दिखाया गया कि किस तरह जमात अहमदिया मुआशरे को फ़ायदा पहुंचाने की ख़ातिर मंसूबे बना रही है और इक़दामात कर रही है।

अलीज़ान (Elez Han) कोसोवि के मेयर मिस्टर महमत कहते हैं। इस ग़ैरमामूली जलसे ने मुझ पर एक गहिरा नक़्श छोड़ा और मैं इत्तिहाद अमन और भाई चारे के इस जज़्बे से बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ जो इस इजतेमा के हर पहलू पर छाया हुआ था। तक़रीब के दौरान तक़ारीर बहुत उम्दा थीं। खासतौर पर ख़लीफ़-ए-वक़्त की तक़रीर मेरे लिए हैरत-अंगेज़ और ईमान अफ़रोज़ थी। मैं अब इस्लाम को सही अर्थों में समझ चुका हूँ। मुझे इंतेज़ामीया की मेहमान-नवाज़ी की तारीफ़ भी करनी चाहिए और सबने बड़ी अच्छी मेहमान-नवाज़ी की।

ताजाकिस्तान से आने वाले एक दोस्त आरज़ू करीम साहिब हैं। ये दोस्त अरबी और ताजिक ज़बान पर महारत रखते हैं और जामिआ अज़हर से shi हैं। बहुत सी अरबी कुतुब का ताजिक ज़बान में अनुवाद भी कर चुके हैं और कई ताजिक कुतुब के मुसन्निफ़ भी हैं। उन्होंने कहा कि मैं ने जलसे को बहुत ग़ौर से सुना और लोगों को देखा और जमात अहमदिया के इन औसाफ़ का ज़िक्र करूँगा जो कि अब दीगर दीनी जमातों में ख़त्म हो रहे हैं और वो अहमदियों के आला हैं।

(पस हर अहमदी को बहुत आला अख़लाक़ दिखाने चाहिऐं मैंने बहुत से इस्लामी फ़िर्क़ों में तहक़ीक़ की है। अगर बाक़ी सब फ़िरक़े उस वक़्त इस्लाम पर एक फ़ीसद अमल पैरा हैं तो ये जमात इस्लाम की तालीमात पर निनानवे फ़ीसद अमल पैरा है। एक बुक स्टॉल पर मुख़्तलिफ़ ज़बानों में लिटरेचर आपकी तब्लीग़ी काविशों का सबूत है। कहते हैं मैं राबिता रखूँगा और जमात के बारे में मज़ीद जानना चाहूँगा। मैं किसी से नहीं डरता सिवाए ख़ुदा के। और ख़लीफ़-ए-वक़्त से मुलाक़ात भी मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं ख़लीफ़-ए-वक़्त की इस बात से सहयोग करूँगा कि असल कमज़ोरी हम लोगों में है और हम हर वक़त हुकूमत और रेजीम (regime) को कोसते रहते हैं। कहते हैं मैं उम्मीद करूँगा कि मेरी दुबारा मुलाक़ात हो और मैं फ़ायदा उठाऊंगा।

ताजिकस्तान के वफ़द में शामिल एक ग़ैर अज़ जमाअत ताजिक दोस्त ने कहा कि ख़लीफ़-ए-वक़्त से मुलाक़ात में ताजिकस्तान के सयासी मसायल और दीनी पाबंदियों पर बहुत सैर हासिल बात हुई। मुझे अच्छा लगा कि उन्हें सारी इन्सानियत की बहुत फ़िक्र है। कहते हैं आने से क़बल मुझे जमाअत अहमदिया के बारे में मनफ़ी ख़बरें दी गई थीं लेकिन मुझे आपकी जमाअत से भाई चारा और इन्सानियत का दरस सीखने का अवसर मिला है।

ताजिकस्तान के एक मुबल्लिग लिखते हैं कि ताजिकस्तान के वफ़द में बहुत मोतरिज़ तबीयत के एक दोस्त शामिल थे। जलसे के पहले दो दिन एतराज़ ही करते रहे। एक एतराज़ करते और जवाब सुने बग़ैर दूसरा एतराज़ कर देते। उनको अपने दोस्तों ने कहा कि हमें मुशाहिदा तो करना चाहिए, देखें, यूंही एतराज़ न किए जाओ। बहरहाल फिर जलसे के दूसरे दिन वफ़ूद की मेरे से मुलाक़ात थी। उनकी भी मुलाक़ात हुई तो मैं ने उनसे ही बात शुरू की और उनका परिचय लिया। मासक पहना हुआ था मैंने कहा उतारें,ज़रा चेहरा दिखाएंगे। काफ़ी तफ़सीली उनसे बातें होती रहीं। बहरहाल मुरब्बी साहिब कहते हैं मुलाक़ात के बाद उन्होंने बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया कि मेरी मुलाक़ात ख़लीफ़-ए-वक़्त से हो गई और फिर मुझे दुआएं भी देते रहे और कहते हैं लेकिन अजीब बात है इस के बाद दो दिन उन्होंने कोई भी एतराज़ नहीं किया और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनका दिल ऐसा साफ़ हुआ कि एतराज़ ख़त्म हो गए

जलसा सालाना में शामिल होने वाले बाअज़ अरब अहबाब के तास्सुरात हैं। एक मेहमान मुहम्मद अली साहिब हैं, सीरिया से उनका ताल्लुक़ है। कहते हैं मेरे एक दोस्त के ज़रीया से मुझे अहमदियत का परिचय हुआ था। मेरा दोस्त मुझे जलसे पर ले के आया मेरा इरादा था कि दिन गुज़ार कर शाम को वापस घर चला जाऊँगा, घर क़रीब ही है क्योंकि यहां जगह आरामदेह नहीं थी। जब मैंने माहौल और तंज़ीम को देखा कि हर शख़्स मुस्कुराता है और बड़ा अच्छा माहौल है गोया एक दूसरे को जानते हैं। कहते हैं ऐसा माहौल मैंने ज़िंदगी में कभी नहीं देखा था। मैंने अपना इरादा बदल दिया और मैंने सोचा कि मैं यहां जलसा पर ज़मीन पर ही सौ जाऊँगा। कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता नीचे मेटर्स बिछी हुई हैं। कहते हैं जलसे के दूसरे ही दिन अहमदियत की सदाक़त मेरे दिल में घर कर गई। मैंने बैअत करने का इरादा कर लिया और अल्लाह तआला ने मुझे उस की तौफ़ीक़ दी। कहते हैं मैं अहमदियों के निज़ाम की पाबंदी, नज़म-ओ-ज़बत का ख़्याल रखना और अदम इंतेशार से बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ। हर कोई अपने फ़रायज़ को जानता है चाहे मुंतज़िम मेहमान।

अब्दुर्रहमान इस्माईल साहिब लिखते हैं जलसा सालाना में पहली बार शरीक हुआ हूँ। दुनिया भर में कोई ऐसा गिरोह नहीं जो ऐसा काम करता हो। हाज़िरीन पूरी दुनिया से शामिल हुए लेकिन किसी किस्म की लड़ाई झगड़ा नहीं देखा। आपस में प्यार मुहब्बत और भाई चारे की आला मिसालें देखी। कहते हैं जो तवक़्क़ो की जा रही थी इस से बढ़कर तादाद शामिल हुई और मुझे बहुत इस्तफ़ादा करने की तौफ़ीक़ मिली।

अब्दुल्लाह इज़्ज़त अकीली साहिब मिस्र से हैं, आजकल फ़्रांस में फिज़िक्स में मास्टर्ज़ कर रहे हैं। कहते हैं फिज़िक्स में हर चीज़ को शक की नज़र से देखा जाता है इसलिए हर चीज़ में शक करना मेरी तबीयत का हिस्सा बन गया है। मैंने बैअत तो बहुत अरसा पहले की थी और जमात और ख़िलाफ़त के साथ ताल्लुक़ भी था लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता दीगर उमूर के इलावा जमाअत के बारे में भी शकूक पैदा हो गए और मैं जमाअत से दूर होने लगा। कहते हैं इस साल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने के लिए हाज़िर हुआ तो रजिस्ट्रेशन में कुछ ताख़ीर हो गई (और रजिस्ट्रेशन की शिकायत यही थी कि रजिस्ट्रेशन वक़्त पर नहीं हो रही थी और लोगों को बड़ी दिक़्क़त का सामना था लेकिन बहरहाल उनको इस ताख़ीर ने, लेट होने ने फ़ायदा दिया) वे कहते हैं जब मैं पहुंचा हूँ तो ख़ुतबा शुरू हो चुका था और जब मैं जलसा गाह में दाख़िल हुआ तो ख़ुत्बे के जो अलफ़ाज़ मेरे कानों में पड़े वे ये थे कि अगर इन्सान हर बात पर बदज़नी करने लगे तो शायद एक दिन भी दुनिया में न गुज़ार सके।

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इक़तेबास में पढ़ रहा था। वह पानी भी न पी सके कि शायद इस में ज़हर मिला दिया हो। बाज़ार की चीज़ें न खा सके कि उनमें हलाक करने वाली कोई शए हो। फिर किस तरह वे ज़िंदा रह सकता है।

(उद्धृत मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 73 एडीशन 1984 ई.) कहते हैं ये शब्द सुनते ही

मैं अंदर से हिल के रह गया। ऐसे लगा कि जैसे मेरा उस वक़्त जलसा-ए-गाह में आना ख़ुदाई तक़दीर थी क्योंकि पहला जुमला ही मेरे मर्ज़ का ईलाज था और जैसे ये मुझे संबोधित कर के कहा जा रहा है। कहते हैं ये कोई इत्तिफ़ाक़ी बात नहीं हो सकती। इस का मेरे दिल पर गहरा प्रभाव हुआ और ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से शकूक और बुराई ख़त्म हो गईं। अल्हम्दुलिल्ला कि ख़ुदा तआला ने जलसा सालाना में शमूलियत की बदौलत मुझे शकूक और बदज़नियों से निजात दी। यह वाक़िया उन्होंने मुझे ख़ुद भी सुनाया है।

कैमरोन से इमाम साहिब आए हुए थे, वहां के बड़े इमाम हैं, कैमरोन के दिवाला (Dovala) शहर के चीफ़ इमाम हैं और दो रीजनज़ की उल्मा कौंसल के चेयरमैन भी हैं। ग़ैर अज़ जमाअत हैं। कहते हैं मैं पहली दफ़ा इतने बड़े प्रोग्राम में शामिल हुआ हूँ।

मेरे लिए बड़ी हैरानगी की बात है कि जलसा सालाना में मुख़्तलिफ़ रंगों के लोग सब ख़ुशी से मिले और आपस में सब एक फ़ैमिली के अफ़राद की तरह प्यार-ओ--मुहब्बत से मिले और तीन दिनों में मुझे किसी किस्म का कोई झगड़ा नज़र नहीं आया। फिर कहते हैं नुमाइशों में जा कर बहुत इलम में इज़ाफ़ा हुआ और मैं जमात की ख़िदमात से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। फिर कहते हैं इमाम जमाअत के ख़ताबात बहुत पुरहकमत थे। इस्लामी तालीमात की बेहतरीन अक्कासी करते थे। औरतों से ख़िताब ने मुझे बहुत प्रभवित किया। अगर हम सब उन ज़रीं हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करना शुरू कर दें तो ये ज़िंदगी जन्नत बन जाए। फिर कहते हैं जलसा के दौरान इमाम जमात का ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों से ख़िताब इस्लामी तालीमात से परिपूर्ण था। इमाम जमाअत ने ऐसी तालीम पेश की कि हर मुस्लमान को अपने दीन पर गर्व करना चाहिए। हम सबको अमली तौर पर इस तालीम को पूरी दुनिया के सामने पेश करना चाहिए। और इस वक़्त अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा को बेहतरीन इस्लामी तालीमात दुनिया के सामने पेश करने के लिए खड़ा किया है। और कहते हैं बाक़ी उल्मा की जो तक़ारीर थीं उनसे भी मेरे इलम में बहुत बढ़ोतरी हुई।

फिर चैक रीपब्लिक से इस दफ़ा पहली बार एक रिटायर्ड प्रोफ़ैसर डेनीयल साहिब शामिल हुए। कहते हैं मेरा जलसा सालाना का पहला तजुर्बा है बहुत सारी चीज़ों ने मुझे प्रभावित किया। एक यह कि नमाज़ के वक़्त मैंने देखा कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ अहबाब-ए-जमाअत जिस अंदाज़ में नमाज़ पढ़ रहे थे ऐसा महसूस होता है कि ख़लीफ़-ए-वक़्त की सांस के साथ वो सांस ले रहे हैं। गोया वे एक वजूद बन गए हैं। मैंने दुनिया में बहुत सी क़ौमों, मज़हबों और लोगों को देखा है। इस तरह की यकजहती और इकाई आज पहली दफ़ा देखने को मिली जिसको देखकर दिल बहुत ख़ुश हुआ। फिर मज़ीद कहते हैं कि दुनिया में बड़ी से बड़ी नुमाइशों में भी जाने का अवसर मिला। उनमें जहां भी सैक्योरिटी देखी वहां सैक्योरिटी अहलकारों का रवैय्या तल्ख़ ही पाया परंतु इस जलसा सालाना पर सैक्योरिटी से लेकर हर कारकुन के चेहरे पर मुस्कुराहट देखी, नरमी देखी जिसका यक़ीनन पूरे जलसा के माहौल पर मुसबत असर पड़ा। एक पुरअमन फ़िज़ा क़ायम थी। इतने बड़े मजमा में बग़ैर किसी रुकावट के चलना यक़ीनन हैरानकुन है। कुछ अहमदियों को शिकवा है सैक्योरिटी से लेकिन शुक्र है कि ग़ैरों को सैक्योरिटी का व्यवहार अच्छा लगा। उमूमन एक--आध होगा जो किसी ने दिखाया होगा या बाअज़ दफ़ा पाबंदी की होगी किसी इलाक़े में लेकिन उमूमी तौर पर सैक्योरिटी वाले भी अच्छे डयूटी देने वाले थे। फिर मेरे से मुलाक़ात का वर्णन करते हुए कहते हैं कि पहले उन्होंने देखा बड़ा प्रभवित हुआ और मैं बड़ा शुक्रगुज़ार हूँ। ये मुलाक़ात भी मेरी ज़िंदगी का एक ज़रीं हिस्सा है और मैंने बातों से बहुत लाभ उठाया।

फिर एक और शख़्स चैक रीपब्लिक से आए हुए एक नौजवान मेहमान हैं। कहते हैं मुझे इस जलसा सालाना पर अहमदियों के द्वारा से ख़ुदा दिखाई दिया है। बहुत से लोग कोशिश करते हैं कि ख़ुदा के मुताल्लिक़ आगाह करें परंतु इस जलसे पर लोगों के ख़ामोश, अच्छे अख़लाक़ को देखकर मुझे आपकी जमाअत में ख़ुदा का वजूद नज़र आया है।

यह भी एक ख़ामोश तब्लीग़ है।

लथवीनया यूनीवर्सिटी की एक अरबी प्रोफ़ैसर गिनतारे सिरे कावते (Gintare Serekaite) जलसे में शामिल हुए। उन्होंने रज़ाकाराना तौर पर इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी का लथवीनीन भाषा में अनुवाद भी किया है। कहती हैं इस्लामी दुनिया में जमाअत अहमदिया को एक मुनफ़रद मुक़ाम हासिल है। जमाअत अहमदिया जिस तरह ग़ैर अज़ जमात और ग़ैर मुस्लिमों के साथ राबिता रखती है कोई और जमाअत ऐसा नहीं करती। एक रिसरचर होने की हैसियत से मुझे इस्लामी कल्चर और इस्लामी रिवायात में काफ़ी दिल-चस्पी है लेकिन लथवीनया में जमात अहमदिया के इलावा किसी भी इस्लामी जमात के साथ मिलना और राबिता रखना बहुत मुश्किल है। जलसा सालाना ने मुझे शानदार मौक़ा दिया कि मैं जमात अहमदिया को हर लिहाज़ से परख सकूँ। यक़ीनन जमात अहमदिया अपने माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं पर हक़ीक़ी रंग में अमल पैरा है। और यहां मुझे सैंतालीस हज़ार लोगों में कोई अजनबीयत का एहसास नहीं हुआ।

फिर लथवीनया से एक मुसन्निफ़ और जर्नलिस्ट जर्वनीमास (Jeronimas) साहिब कहते हैं मैं दुनिया में मौजूद बदअमनी और बे-इंतिहा ग़ुर्बत से बहुत परेशान हूँ। हमेशा सोचता हूँ कि ऐसे हालात में एक आम आदमी क्या कर सकता है? लेकिन जब यही सवाल मैंने ख़लीफ़ उल-मसीह से पूछा तो मुझे निहायत ही संतुष्ट करने वाला जवाब मिला कि इन्सान का उद्देश्य तो वही है जो क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन हुआ है कि इन्सान की तख़लीक़ का उद्देश्य अल्लाह तआला की इबादत करना है। लोगों को यह बात ज़हन में रखनी चाहिए कि मौत के बाद भी एक ज़िंदगी है। अगर लोग इस तरफ़ तवज्जा नहीं देंगे तो दुनिया में हमेशा बदअमनी रहेगी। मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि ख़लीफ़-ए-वक़्त की तवज्जा पहले से ही इस मसले की तरफ़ है और वे लोगों को अपने ख़ताबात और ख़ुतबात में दुनिया के मसायल के हल भी बता रहे हैं।

फिर किर्गीज़स्तान से काचीव (Kachiev) साहिब आए थे। वे कहते हैं जलसे के दौरान मैंने अपने मज़हब और जमात के बारे में बहुत कुछ सीखा। मुझे मेरे बहुत से प्रश्नों के उत्तर मिल गए। मैं अपनी ज़िंदगी में पहली दफ़ा जलसे में शामिल हुआ हूँ और पहली दफ़ा ही बैरून-ए-मुल्क निकला हूँ। मुझे अंदाज़ा नहीं था कि इतने लोगों का हुजूम जलसे के दौरान होगा मैंने वहां होने वाली तमाम बातें सुनें और मुझे बहुत दिलचस्प लगीं। सब कुछ बेहतरीन था।

कज़ाख़स्तान से आने वाले एक अहमदी दोस्त अली बेग साहिब कहते हैं जलसा में शामिल होना बहुत अच्छा लगा। जब बैअत की तो एक अलग ही एहसास था और जब ख़लीफ़-ए-वक़्त से मुलाक़ात हुई तो मेरे सब एहसासात, जज़बात अपने आख़िरी नुक्ता पर पहुंच गए और मेरा जलसे पर आने का उद्देश्य पूरा हो गया। जलसा में शमूलियत का असर इतना ज़्यादा है कि मेरे बीवी और बच्चे भी कह रहे थे कि तुम बदल गए हो। अगले साल इन शा अल्लाह बीवी और बच्चों के साथ जलसे में शामिल होने का है।

यासमीन साहिबा एक तुर्की महिला हैं। पेशे के एतबार से टीचर हैं। यहां जर्मनी में ही रहती हैं। वह शामिल हुईं। कहती हैं ख़लीफ़-ए-वक़्त का ख़िताब मेरे सवालों का जवाब था। जलसे का माहौल मुझे बहुत पसंद आया। इतने बड़े इजतेमा के बावजूद इतने ज़्यादा अमन और सुकून से हर काम का होना मुझे तसकीन क़लब अता करता रहा। इतने ज़्यादा लोगों का सिर्फ रज़ाए बारी के लिए इकट्ठे होना और फिर इन सब का मुहब्बत की लड़ी में पिरोए होना एक ग़ैरमामूली हैरानकुन बात थी। कहती हैं मुख़्तसर यह कि वहां जो कुछ कहा गया और जिस सोच का इज़हार किया गया मुझे उसी की तलाश थी। इस दिन मैंने एक पज़ल् (puzzle) के हर हिस्से को अपनी अपनी जगह फिट बैठते देखा।

सर्बिया से आने वाले एक जर्नलिस्ट सतानीसलाव (Stanislav) साहिब अपने ख़्यालात का इज़हार करते हैं कि बावजूद एक आर्थोडोक्स ईसाई होने के और बावजूद उस के कि इंटरनैट में आपके ख़िलाफ़ बहुत नफ़रत फैली हुई है मैं आपकी जमाअत से बहुत प्रभवित हुआ। आपकी इंतेज़ामिया और सिस्टम ने मुझे हैरान कर दिया है।

मैं बहुत ही दुखी हूँ कि हम अहमदियत की हक़ीक़ी तालीम दुनिया में वसीअ पैमाने पर फैला नहीं सकते। हमने आपके माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं का हर क़दम पर मुशाहिदा किया। हमें ना इंतेज़ामिया में और न छयालीस हज़ार अफ़राद में कोई बुरी बात नज़र आई। हर जगह अमन था। हर एक ने दूसरे की इज़्ज़त की इसी तरह जिस तरह आपकी तालीम है। कहता है मेरे लिए अलफ़ाज़ में यह वर्णन करना है।

सर्बिया से आने वाली एक जर्नलिस्ट महिला मय्या (Mia) साहिबा कहती हैं मेरे दिल में जलसा सालाना की इंतेज़ामिया, श्रोताओं और समस्त शामिल होने वालों के बारे में बहुत मुसबत तास्सुरात हैं। सबसे ज़्यादा मैं ख़लीफ़ा के लजना की तरफ़ ख़िताब से मुतास्सिर हुई। इसी तरह में समस्त इंतेज़ामिया की इंतेहाई शुक्रगुज़ार हूँ।

फिर एक लोकल पोलिश अहमदी महिला कहती हैं : तीन साल पहले एक ख़ाब में मैं ने देखा कि में एक मुलाक़ात में हूँ और मुझ से वे कुछ सवाल करना चाहती हैं। कहती हैं लेकिन मुझे सवाल करने का मौक़ा नहीं मिला। इस पर कहती हैं मैं बहुत परेशान हुई। सवाल मेरा बहुत ज़रूरी था। लेकिन कहती हैं इस मर्तबा जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुई और मुलाक़ात का अवसर मिला तो मुझे वे सवाल करने का अवसर मिल गया और ख़लीफ़-ए-वक़्त की तरफ़ से एक निहायत मुतमइन कर देने वाला जवाब भी मुझे मिल गया। इस के बाद मुझे एक अजीब सी संतुष्टि हासिल हुई। मैं बहुत मशकूर हूँ।

एक जर्मन मेहमान गौनतर मोर (Gunter Moar) साहिब ने कहा। मैं मज़हब इस्लाम को critical नज़र से देखता हूँ। मगर मैंने फिर भी ख़लीफ़ा के ख़िताब को बहुत तवज्जा से सुना है यहां तक कि ख़लीफ़ा ने जो हवाले अपने ख़िताब में वर्णन किए थे मैंने उनको भी चैक किया है। (इतनी गहराई से कुछ लोग देखते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ की जो आयतें ने quote की थीं, कहीं वे ग़लत तो नहीं, सिर्फ दिखाने के लिए तो नहीं। जा के क़ुरआन शरीफ़ चैक किया है कहते हैं मैं तस्लीम करने पर मजबूर हूँ कि ख़लीफ़ा का ख़िताब सुनकर मुझे बहुत हैरानगी हुई कि ख़लीफ़ा ने अमन और भाई चारे पर इतना ज़ोर दिया है। निसंदेह ख़लीफ़ा ने बहुत अच्छा ख़िताब किया।

मैं ये बार-बार कहने पर मजबूर हूँ कि मेरी हैरानगी का आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते क्योंकि इस्लाम की एक अम्न पसंद तस्वीर आपने दिखाई है जो यहां उमूमन नज़र नहीं आती। यक़ीनन इस्लाम के बारे में मेरे नज़रिया में आज बहुत बड़ा इज़ाफ़ा हुआ है क्योंकि इस से पहले मैं इस्लाम को अमन का मज़हब तसव्वुर भी नहीं कर सकता था और इस्लाम की अमन की तालीमात का मुझे इलम नहीं था।

मैंने आज सबसे पहले ख़लीफ़ा का लजना से ख़िताब मर्दाना हाल की स्क्रीन पर देखा। मुझे नहीं पता था कि यह ख़लीफ़ा हैं परंतु इस ख़िताब को सुनके भी बहुत प्रभवित हुआ और जब मेहमानों के स्टेज पर आए तब मुझे पता लगा। तब मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि मैं बराह-ए-रास्त आपको सुनूँगा।

एक जर्मन मेहमान केविन (Kevin) साहिब कहते हैं मैं तो ख़लीफ़ा के ख़िताब को सुनकर हैरान रह गया हूँ। मेरे पास अलफ़ाज़ नहीं कि क्या कहूं लेकिन मैं यह जानता हूँ कि हर एक को इन सब बातों पर अमल करना चाहिए जो ख़लीफ़ा ने बयान कीं और ख़लीफ़ा ने मुस्कुराहट के बारे में जो बात वर्णन की है वह बहुत ज़रूरी है। इस की कमी जर्मनी में बहुत ज़्यादा है। ख़ुद अपनी बातें बता रहे हैं कि हमें मुस्कुराते रहना चाहिए जो हम में नहीं है। और हमारे लोग मुतास्सिर हो जाते हैं। औरतों के मुक़ाम के बारे में आपके इर्शादात से मु-कम्मल तौर पर मुत्तफ़िक़ हूँ और समझता हूँ कि जो भी ख़लीफ़ा ने बयान किया वे सब सच्च है।

एक जर्मन मेहमान ईसाई क्रिस्टियान (Christian) कैथोलिक टीवी के नुमाइंदे हैं। कहते हैं ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत प्रभावित कुन था। ख़िताब का दायरा सामेईन की वुसअत के मुताबिक़ तशकील दिया। मैं समझता हूँ कि जिस तरह ख़लीफ़ा ने बुनियादी उसूल वर्णन करने के साथ साथ यह भी वाज़िह कर दिया कि ये बुनियादी उसूल भी ख़ुदा ने सिखाए हैं न कि आज यूनाईटिड नेशनज़ या किसी और के क़ायम करदा हैं। इस तर्ज़ पर बाक़ी मज़हबी राहनुमाओं को इस वज़ाहत के साथ अपने ख़िताब देने चाहिएं। कहते हैं ख़लीफ़ा का ख़िताब ऐसा था कि महिज़ सुन लेना काफ़ी नहीं बल्कि इस पर बहुत ग़ौर-ओ-फ़िक्र करना चाहिए कि आपकी वर्णन करदा बातों से मुराद क्या है। मैंने इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम के बारे में बहुत तहक़ीक़ की है और इस्लाम के बारे में मेरा तसव्वुर बहुत अच्छा है। ख़लीफ़ा ने इस्लाम में औरतों के बारे में जो तालीमात वर्णन की हैं वह बहुत दिलचस्प हैं परंतु मेरी ख़ाहिश है कि लोग ये याद रखें कि ये हुक़ूक़ और मुक़ाम किसी एन जी ओ या यू एन ओ ने क़ायम नहीं किए बल्कि ख़ुदा तआला ने मज़हब के ज़रीया से क़ायम किए हैं।

एक जर्मन मेहमान जूलियान (Julian) साहिब कहते हैं मेरी बात कर रहे हैं कि बड़े ओपन थे और मैंने उनकी मजलिस में बड़ा हमदरद उन्हें महसूस किया। जो बातें कीं गहरे तजुर्बे की बुनियाद पर बड़ी गेहरी बातें थीं और यह कि इन्सान जिस मुल्क में रहे उस मुल्क की ख़िदमत करे। हमसाइयों की तारीफ़ के साथ चालीस घरों तक वुसअत देना यह मेरे लिए बड़ी बात थी क्योंकि यूंही हक़ीक़ी तौर पर हर एक का ख़्याल रखा जा सकता है। ईसाइयत ने भी हमसाइयों के हुक़ूक़ के बारे में तालीमात दी हैं मगर यह नहीं बताया कि हम-साएगी में कौन कौन शामिल हैं। इसी वजह से सिर्फ साथ वाले को हमसाया शुमार किया जाता है जबकि इस्लाम ने इस से ज़्यादा बेहतर तालीम पेश की है। यह एक ईसाई कह रहे हैं।

एक जार्जियन महिला कहती हैं, मैंने आज ख़लीफ़ा के दोनों ख़िताब सुने। बहुत प्रभवित हुई। इन खिताबात ने आज यह बात मुझे समझाई है हक़ीक़ी integration का मतलब यह है कि इन्सान अपने मज़हब क़ौम और इन्सा-नियत की ख़िदमत करे। कहती हैं मुझे जलसा सालाना का माहौल पसंद आया क्योंकि यहां हर किस्म की क़ौम-ओ-नसल के और हर किस्म के लोग बड़ी मु-हब्बत और इत्तिफ़ाक़ से और पुरअमन तौर पर इकट्ठे हुए थे जो कहीं और देखने को नहीं मिलता। लजना का जो ख़िताब था इस में मुझे पहली दफ़ा पता लगा कि इस्लाम में औरतों का क्या मुक़ाम है। ऐसी मुस्लमान औरतें भी गुज़री हैं जिन्हों ने जंगों में भी हिस्सा लिया। यह मेरे लिए बड़ी हैरानकुन बात थी।

मेहमान अली बक्र साहिब ग्रीन मुस्लिम पार्टी के अनुवादक कहते हैं ख़लीफ़ा का ख़िताब दिलचस्प, प्रभवित करने वाला था। आपने जो बातें वर्णन की हैं वे न सिर्फ मुस्लमानों के लिए बल्कि मुआशरे के हर तबक़े के लिए ज़रूरी हैं और यह कहना कि अमन सिर्फ़ मुस्लमान देशों में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में क़ायम करने की कोशिश करनी चाहिए मेरे लिए बहुत दिलचस्प बात थी।

फिर एक जर्मन महिला मेहमान मैरी (Marie) साहिबा हैं। यह मुस्लमान नहीं थीं इस के बावजूद वहां एहतेराम के लिए दुपट्टा ओढ़ कर बैठी थीं। कहती हैं मैं ईसाई हूँ और ख़लीफ़ा के ख़िताब के दौरान मुझे महसूस हुआ कि हमारा आपस में फ़र्क़ सिर्फ मामूली है। हम मिल-जुल कर पुरअमन तरीक़े से रह सकते हैं और मैं बहुत मुतास्सिर हुई हूँ। दौरान ख़िताब मेरे दिल पर इतना असर हुआ कि मेरी आँखें नम हो गईं। उन्होंने औरतों के बारे में जो तालीमात वर्णन की हैं इस से ज़ाहिर होता है कि इस्लाम औरतों को जो हुक़ूक़ देता है वही हैं जो ख़लीफ़ा की तक़रीर में वर्णन हुए और जो दूसरी कमियो नोटीज़ करती हैं। मैंने ख़ुद जलसा सालाना पर मुशाहिदा किया है कि इन तालीमात पर अमल भी किया जाता है, सिर्फ तालीम नहीं। कहती हैं : उनकी बातें सीधा दिल को छूने वाली थीं और मैंने यहां लोगों को बातें सुनके रोते भी देखा है।

जलसे पर सात देशों के उनतालिस लोगों ने बैअत की भी तौफ़ीक़ पाई जो इन दिनों प्रभवित हुए।

और एक सर्बिया से आने वाले मेहमान ओरस (Uros) साहिब हैं। कहते हैं जलसा सालाना दुनिया-भर की अहमदिया जमाअत के मैंबरों को जमा करने वाली आलमी तक़रीब है। सबसे ज़्यादा बैअत की तक़रीब ने मेरे पर रुहानी और जज़बाती असर डाला है। पहले लम्हा से हम सबने एक दूसरे के कंधों पर हाथ रख दिए। मुझे एक भी लफ़्ज़ समझ नहीं आ रहा था परंतु जो कुछ भी कहा गया वह किसी तरह मेरे जिस्म और दिमाग़ से गुज़रा और कपकपी तारी हो गई जो मुझे रुहानी तौर पर अल्लाह तआला के क़रीब-तर ले गई। बैअत की वजह से मुझे आँसू आ थे।

एक तर्क नौजवान जान मृत (Jan Mert) साहिब हैमबर्ग से हैं। कहते हैं इस जलसे में शामिल हो कर मैंने मुशाहिदा किया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अहमदियों के दिलों में फ़तह इस्लाम के लिए एक न बुझने वाली आग जला दी है। जान मृट साहिब ने जलसे के आख़िरी दिन तहरीरी बैअत करने के बाद मेरे हाथ पर भी की।

यह हालात थे उनके बाअज़ लोगों के जो मैंने वर्णन किए।

जलसा जर्मनी में मीडीया कवरेज भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़ी अच्छी हुई। चार टीवी चैनल में ए.आर डी (ARD) आर. टी. ईल, Regio टी. वी, ऐस डब्लयू आर। इन टीवी चैनल के ज़रीया से कहते हैं कि इकतालीस मिलियन लोगों तक जमाअत की, जलसे की ख़बर पहुंची।

अख़बारात जर्मनी की ग्यारह अख़बारात ने मुख़्तलिफ़ ख़बरें और आर्टीकल प्रकाशित किए। इस के ज़रीया से भी पच्चास मिलियन से ज़ायद लोगों तक जमाअत का पैग़ाम और जलसे की ख़बर पहुंची।

रेडियो-स्टेशन जो हैं, पाँच रेडीयो स्टेशनज़ ने ख़बरें नशर कीं। उनके ज़रीया भी कहते हैं चौदह मिलियन लोगों तक पैग़ाम पहुंचा

ऑनलाइन मीडीया कवरेज के ज़रीया दो मिलियन लोगों तक पैग़ाम पहुंचा और टोटल संख्या जो हैं उसके ज़रीया से उनका ख़्याल है एक सौ आठ मिलियन से ज़ायद अफ़राद तक जलसा सालाना की कवरेज पहुंची है। बहरहाल अल्लाह

तआला उसके आइन्दा भी बेहतर नतायज भी करे।

यह मुख़्तसर कवायफ़ थे जैसा कि मैंने कहा मैं ने लोगों के जो तास्सुरात लिए हैं, बहुत से तास्सुरात थे उनमें से चंद एक मैंने लिए थे

अल्लाह तआला का यह शुक्र और एहसान है कि वे हमारी पर्दापोशी फ़रमाता है। इसी तरह मुख़्तलिफ़ मसाजिद के जो इफ़्तिताह हुए हैं उनमें भी लोगों ने अपने मुसबत तास्सुरात दिए हैं। बाअज़ ने इज़हार किया कि हमें पता नहीं था कि अहमदियत क्या है, इस्लाम की तालीम क्या है, इस्लाम किस तरह हुक़ूकुल--ईबाद और हुक़ूकुल्लाह की तरफ़ तवज्जा दिलाता है। मुख़्तलिफ़ फंक्शनों में लोगों ने इज़हार किया है, ये सब बातें सुनकर आज हमें इस्लाम की तालीम के बारे में पता लगा और हमारी राय बदल गई है

लोगों ने शिकवा यह भी किया है कि हमारे वाक़िफ़ अहमदियों ने भी कभी हमें इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम से आगाह नहीं किया। अतः इस बारे में भी तब्लीग़ का मोस्सर प्रोग्राम बनाने की ज़रूरत है।

हर अहमदी को बग़ैर किसी एहसास-ए-कमतरी के इस्लाम का परिचय और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का परिचय करवाना चाहिए। उदाहरणतः जलसे पर एक ईरानी लड़का आया हुआ था। हमारे एक अहमदी से उस की बात हुई। उस को इस का एक अहमदी दोस्त ले के आया हुआ था। कहने लगा कि मैं यहां आ के बड़ा अपसेट हुआ हूँ। उन्होंने वजह पूछी। उसने कहा मुझे आज यहां पता लगा है कि तुम लोग मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम को नबी मानते हो। बहरहाल जब उसको तफ़सील से समझाया गया कि किस किस्म का नबी हम मानते हैं, आँहज़रत सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आया हुआ नबी मानते हैं, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन को फैलाने वाला और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ आने वाला समझते हैं और वही ईसा हैं जिसने आना था। कहता है ये सब तो ठीक है। मैं मानता हूँ महदी ईसा का जो तुम्हारा नज़रिया है ठीक है, अक़ल को लगता है लेकिन मेरे दोस्त ने मुझे क्यों बताया! कई सालों से मेरा दोस्त था। तो बहरहाल बग़ैर किसी एहसास-ए-कमतरी के अपने दोस्तों को, वाक़िफ़ कारों को हमें तब्लीग़ करनी चाहिए और इस बारे में मोस्सर तब्लीग़ की ज़रूरत है। विभाग तब्लीग़ का सिर्फ पमफ़लेट तक़सीम कर देना, लीफ़ लेट्स बांट देना या लेटर बक्सों में लीफ़ लेट्स डाल देना उद्देश्य पूरा नहीं करता।

अमन की बातें तो हमने कर लीं अब अगली बात की ज़रूरत है कि अमन किस तरह क़ायम होगा। मसीह मौऊद और महदी मौऊद को मान के क़ायम होगा इसलिए उस को क़बूल करो। तब्लीग़ के लिए हर मौक़ा से हमें फ़ायदा उठाना चाहिए।

यहां मैंने देखा है कि लोगों को अभी भी मज़हब की बातें सुनने में दिलचस्पी है, एक वर्ग ऐसा है। अतः हमें ऐसे प्रोग्राम बनाने चाहिएं कि जहां ऐसे लोगों को बुलाया जाए, उनसे बातें की जाएं।

बहरहाल हमें हर जगह अपने जायज़े लेने की ज़रूरत है। जहां-जहां इंतेज़ामी कमज़ोरियाँ हैं जलसा के इंतेज़ामात में किसी भी मुस्तक़िल विभाग में, उन पर ख़ासतौर पर ग़ौर करना चाहिए। सिर्फ जलसे के इंतेज़ामात नहीं, हर विभाग को देखना चाहिए। तब्लीग़ का शोबा अल्लाह के फ़ज़्ल से अच्छा काम करता है लेकिन अभी बेहतरी की बहुत गुंजाइश है। ख़ूब से ख़ूब-तर की तलाश में हमें रहना चाहिए। अच्छी प्लैनिंग करके और अल्लाह तआला से मदद मांगते हुए, दुआ करते हुए अपने काम करें। बाअज़ लोगों ने बाअज़ शिकवे भी किए हैं, आइन्दा इन शिकवों को भी दूर करना है जैसा कि मैंने वर्णन किया। इन शा अल्लाह हमेशा यह कोशिश करें कि हमने, इंतेज़ामिया ने भी और शामिल होने वालों ने भी जलसा के उद्देश्य को पूरा करने की भरपूर कोशिश करनी है।

जैसा कि मैंने वर्णन किया एक मेहमान ने ज़िक्र किया कि जलसे में शामिल होने की कार्रवाई के दौरान उठकर चले जाते थे। उनको अच्छा नहीं लगा। तो इस बात को भी ख़ासतौर पे देखना चाहिए तर्बीयत के विभाग को। और बेहतर रंग में इस में काम करने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हम पर रहम फ़रमाए और आइन्दा सबको बेहतर रंग में जलसे के उद्देश्य को पूरा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अगर वह मज़मून होता तो शब्द इस प्रकार होंने चाहिए थे اِلَّا اَنْ تَقُوْلَ اِنْ परंतु यहां तो अल्लाह तआला फ़रमाता है اِلَّا اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ अर्थात ऊपर वाला वाक्य उस वक़्त तक न कहें जब तक कि अल्लाह तआला तुझे इस वाक्य के कहने का हुक्म न दे। अतः आयत का मतलब तो केवल यह है कि इस क़ौम का मुक़ाबला मुस्लमान अपनी ताक़त से न कर सकेंगे बल्कि वे उनका मुक़ाबला कर सकेगा जिसे अल्लाह तआला अपनी इच्छा से उनके मुक़ाबला के लिए खड़ा करेगा।

इस आयत में मुस्लमानों की इस वक़्त की हालत की तरफ़ इशारा है जब वह इन अक़्वाम की तरक़्क़ी को देखकर जोश में आएँगे और उनका मुक़ाबला करने की तैयारियां करेंगे लेकिन वे इस में सफल न होंगे। दूसरे इस ज़माना के मुस्लमानों की हालत बताई है कि वे काम की बजाय कल की उम्मीदों पर आ जाऐंगे और हमेशा ये कहेंगे कि हम कल ये कर दिखाएँगे अर्थात क़ुव्वत अमलिया नष्ट हो जाएगी और डरावे और धमकियां रह जाएँगी और हमेशा कुल का शब्द बोलते रहेंगे कभी वे कुल आज की सूरत इख़्तेयार नहीं करेगा। इसलिए देख लो कि इस ज़माना में ये सदाक़त सारी मुस्लमान अक़्वाम के आमाल से इस तरह ज़ाहिर हो रहा है कि अफ़सोस भी आता है और आश्चर्य भी।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ कर बताया कि अगर कभी जोश में आकर इन क़ौमों के मुक़ाबला का ख़्याल तुम्हारे दिल में पैदा हो तो अल्लाह तआला के वादों को याद कर लिया करो कि ख़ुदा तआला का वादा है कि एक दिन मुस्लमानों को उनके हमला से बचाए गा और ग़ैब से मुस्लमानों की निजात के सामान पैदा करेगा। इस लिए इलाही तदाबीर के सिवा दूसरी तदाबीर का ख़याल दिल से निकाल देना चाहिए।

وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا में भी यह सबक़ दिया कि तुम्हारी ज़ाहिरी तदाबीर तो सैंकड़ों सालों में इन अक़्वाम को तबाह नहीं कर सकतीं लेकिन अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से बहुत जल्द ऐसे सामान पैदा कर देगा कि तुम फ़ित्नों से महफ़ूज़ हो जाओगे।

अफ़सोस मुस्लमानों ने इस नसीहत से भी फ़ायदा नहीं उठाया और यूरोपियन अक़्वाम के मुक़ाबला पर बार-बार जिहाद के ऐलानात कर के इस्लाम के रोब को और भी मिटा दिया बल्कि जिन ख़ैर-ख़्वाहों ने उनको इस किस्म की बातों से रोका उनको इस्लाम का दुश्मन क़रार दिया और यह नहीं समझे कि जो क़ुरआन-ए-करीम की तालीम की तरफ़ बुलाते हैं वह इस्लाम के दुश्मन नहीं बल्कि वे दुश्मन हैं जो बावजूद क़ुरआन-ए-करीम के मना करने के फिर भी ग़लत तरीक़ा को प्रयोग करते चले जाते हैं।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 439 प्रकाशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान

29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ये एतराज़ करते हैं कि चूँकि आपने अंग्रेज़ों की प्रशंसा की है इस लिए अंग्रेज़ का एजैंट होना साबित हो गया, अब उनके शब्द सुनिए .. अल्लामा सर मोहम्मदइ क़बाल .. उस ज़माना में अंग्रेज़ों के विषय में क्या कहा करते थे और क्या लिखा करते थे, उनके जज़बात और ख़्यालात क्या थे वे मुलाहिज़ा हों। मलिका विक्टोरिया की वफ़ात पर आप ने एक कविता लिखी इस में फ़रमाते हैं

मय्यत उठी है शाह की, ताज़ीम के लिए
इक़बाल उड़ के ख़ाक-सर रह गुज़ार हो
सूरत वही है नाम में रखा हुआ है क्या
देते हैं नाम माह-ए-मुहर्रम का हम तुझे

अर्थात जिस महीने में मलिका विक्टोरिया फ़ौत हुईं इक़बाल कहते हैं कि उस महीना का नाम जो मर्ज़ी रख लो हक़ीक़त में यह मुहर्रम के वाक़िया से मुख़्तलिफ़ नहीं है, मुहर्रम में जो दर्दनाक वाक़िया गुज़रा था यह वाक़िया उस की एक नई सूरत है

मज़ीद फ़रमाते हैं

कहते हैं आज ईद हुई है हुआ करे
इस ईद से तो मौत ही आए ख़ुदा करे

फिर लिखते हैं

हे हिंद तेरे सिर से उठा साया-ए-ख़ुदा
एक ग़मगुसार तेरे मकीनों की थी, गई
हिलता है जिससे अर्श यह रोना उसी का है
ज़ीनत थी जिस से तुझको जनाज़ा उसी का है

(बाक़ियात इक़बाल, मर्तबा सय्यद अब्दुल वाहिद मुईनी एम.ए. ऑक्सन, शाय करदा आईना अदब, अनारकली लाहौर बार दौम पृष्ठ 73,76,81,90)

"मुंसिफ़ के ऐडीटर मुलाहिज़ा फ़रमाएं कि अल्लामा इक़बाल न सिर्फ मलिका की तारीफ़ में हद से आगे निकल गए बल्कि उसे साया--ए-ख़ुदा भी कहा। अहल-ए-हदीस के चोटी के आलम और बुज़ुर्ग शमसुल उलमा मौलाना नज़ीर अहमद देहलवी फ़रमाते हैं

"सारे हिंदुस्तान की आफ़ियत इसी में है कि कोई अजनबी हाकिम इस पर मुसल्लत रहे जो न हिंदू हो न मुस्लमान हो कोई सलातीन यूरोप में से हो (अंग्रेज़ ही नहीं जो भी मर्ज़ी हो यूरोप का हो सही परंतु ख़ुदा की बे-इंतिहा मेहरबानी उस की मुक़तज़ी हुई कि अंग्रेज़ बादशाह आए।" (मजमूआ लैक्चरज़ मौलाना नज़ीर अहमद देहलवी, पृष्ठ नंबर 4,5- मुद्रित 1890)

फिर फ़रमाते हैं :

क्या गर्वनमैंट जाबिर और सख़्त-गीर है तौबा तौबा माँ बाप से बढ़कर शफ़ीक़। (इसी से पृष्ठ : 19)

फिर फ़रमाते हैं :

"मैं अपनी मालूमात के मुताबिक़ उस वक़्त के हिंदुस्तान के वालियाने मुल्क पर नज़र डालता था और बर्मा और नेपाल और अफ़ग़ानिस्तान बल्कि फ़ारस और मिस्र और अरब तक ख़्याल दौड़ाता था इस सिरे से उस सिरे तक एक मुतनफ़्फ़िस समझ में नहीं आता था जिस को मैं हिंदुस्तान का बादशाह बनाऊँ (अर्थात अगर मैं ने ख़्यालात में बादशाह बनाना होता तो किस को बनाता) उम्मीदवार इन सलतनत में से और कोई गिरोह उस वक़्त मौजूद नहीं था कि मैं इस के इस्तेहक़ाक़ पर नज़र करता अतः मेरा उस वक़्त फ़ैसला यह था कि अंग्रेज़ ही सलतनत हिंदुस्तान के अहल हैं, सलतनत इन्ही का हक़ है, उन्ही पर बहाल रहनी चाहिए।"

(इसी से पृष्ठ : 26)

ऐडीटर रिसाला "चट्टान" शोरिश काश्मीरी साहिब लिखते हैं

जिन लोगों ने हवादिस के इस ज़माना में जिहाद के अंत की तावीलों के इलावा اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ का मिस्दाक़ अंग्रेज़ों को ठहराया उनमें मशहूर इन शा पर्दाज़ डिप्टी नज़ीर अहमद का नाम भी है।"

(किताब "अताउल्लाह शाह बुख़ारी" पृष्ठ : 135)

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के अंग्रेज़ी सलतनत के विषय में ख़्यालात ये थे।

"सुलतान-ए-रुम एक इस्लामी बादशाह है लेकिन अमन आम्मा और हुस्ने इंतिज़ाम के लिहाज़ से (मज़हब से क़त-ए-नज़र ब्रिटिश गर्वनमैंट भी हम मुस्लमानों के लिए कुछ कम फ़ख़र का मूजिब नहीं है और ख़ास गिरोह अहल-ए-हदीस के लिए तो यह सलतनत बलिहाज़ अमन-ओ-आज़ादी उस वक़्त की समस्त इस्लामी सल्तनतों रुम, ईरान, ख़ुरासान से बढ़कर फ़ख़र का महल है।"

(रिसाला इशातुल सुन्ना, भाग 6, नंबर 10 पृष्ठ 292-293)

फिर फ़रमाते हैं :

इस अमन-ओ-आज़ादी आम-ओ-हुस्ने इंतेज़ाम ब्रिटिश गर्वनमैंट की नज़र से अहल-ए-हदीस हिंद इस सलतनत को अज़-बस ग़नीमत समझते हैं और इस सलतनत की रियाया होने को इस्लामी सल्तनतों की रियाया होने से बेहतर जानते हैं।"

(रिसाला इशातुल सुन्ना, भाग 6, नंबर 10 पृष्ठ 292-293)

मौलाना ज़फ़र अली ख़ान साहब का एक मंजूम कलाम मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

झुका फरत-ए-अक़ीदत से मेरा सिर
हुआ जब तज़किरा किंग एमपाएर का
जलालत को है क्या-क्या नाज़ इस पर
कि शाहंशाह है वो बहर-ओ-बर का
ज़हे-क़िस्मत जो हो एक गोशा हासिल
हमें उस की निगाह्-ए-फ़ैज़ असर का

(अख़बार ज़मींदार लाहौर 19 अक्तूबर 1911)

"नदवतुल ओलमा की बुनियाद भी एक अंग्रेज़ ही ने रखी। इसलिए उनका अपना रिसाला "अल् नदवा" लिखता है

"हिज़ ऑनर लैफ़्टीनैंट गवर्नर बहादुर ममालिक-ए-मुतहदा ने मंज़ूर फ़रमाया था कि दारूल उलूम नदवतुल ओलमा का नीव का पत्थर अपने हाथ से रखेंगे। ये तक़रीब 28 नवंबर 1908 को अमल में आई। (अल् नदवः दिसंबर 1908 ई. नंबर 11 भाग 5 पृष्ठ 2)

वर्णित अंक जिसका हवाला दिया गया है , इस के पृष्ठ 4 पर अरबी ऐडरैस है जिस में सरजान बरसकाट के सी ऐस आई का नदवः का नीव का पत्थर रखने की दरख़ास्त को क़बूल करने पर शुक्रिया अदा किया गया है । (इसी से)

यह वर्णन करने के बाद अब अगला हिस्सा काबिल-ए-ग़ौर है। मालूम होता है कि उनके दिल में यह चुभन पैदा हुई कि मुस्लमान लोग पढ़ेंगे तो क्या कहेंगे कि जिस नदवः की बुनियाद अंग्रेज़ गवर्नर ने रखी है वे आगे जाकर क्या बनेगा और इस के क्या उद्देश्य हैं? इसलिए वे एक निहायत ही ख़तरनाक बात कह गए और वे इस से बिल्कुल नहीं शरमाए। वे बात तो तमाम मुस्लमानों के दिल पर ख़तरनाक चरका है। एक अंग्रेज़ से संग-ए-बुनियाद रखवाने की ताईद में और इस की तोजीहात पेश करते हुए कि क्यों ऐसा हुआ फ़रमाते हैं :

"यह पहला ही अवसर था कि एक मज़हबी दरसगाह का संग-ए--बुनियाद एक ग़ैर मज़हब के हाथ से रखा जा रहा था।" (मस्जिद नब्वी का मेंबर भी एक नसरानी ने बनाया था)' (अल् नदवः लखनऊ दिसंबर 1908 पृष्ठ 1,2)

चूँकि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) उनके नज़दीक मस्जिद नबवी के मेबर भी नसरानी बनाते रहे इस लिए अगर "नदवः" की भी तामीर नसरानी ने कर दी तो क्या फ़र्क़ पड़ता है परंतु

साथ ही फिर यह भी मानना पड़ा कि

"وَنَحْنُ عَلٰى يَقِيْنٍ مِنْ اَنَّ الْمُسْلِمِيْنَ كَمَا يُسْلِمُ اَذْعَانَهُمْ لِحُكُوْمَتِهِمْ يَزِيْدُوْنَ مِنْ هٰؤُلَاءِ الْعُلَمَاءِ النَّاشِئِيْنَ طَاعَةً وَانْقِيَادًا لِلْحُكُوْمَةِ۔ وَالْاٰن نُقَدِّمُ اِلٰى جَنَابِكُمْ اَزْكَى التَّشَكُّرَاتِ حَيْثُ تَفَضَّلْتُمْ عَلَيْنَا بِقَطِيْعَةٍ مِنَ الْاَرْضِ لِنَرْفَعَ عَلَيْهَا قَوَاعِدَ مَدْرَسَتِنَا"

अनुवाद : हम इस यक़ीन पर क़ायम हैं कि जैसा कि मुस्लमान, हुकूमत की इताअत-ओ-फ़रमांबर्दारी का जुआ अपनी गर्दन पर रखते हैं, वे इन पैदा होने वाले उल्मा (अर्थात नदवः से फ़ारिग़ होने वाले उल्मा की बदौलत हुकूमत की इताअत-ओ-फ़रमांबर्दारी में और भी आगे बढ़ेंगे। और अब मैं आपके हुज़ूर बहुत ही पाकीज़ा जज़बात-ओ--शुक्रिया का इज़हार करता हूँ कि आपने हमें ज़मीन का एक टुकड़ा इनायत फ़रमाया ताकि हम इस पर अपने मुदर्रिसा की बुनियाद रख सकें।

"अल् नदवः" जुलाई 1908 भाग 5 पृष्ठ 1 में यह बात खुल कर कही गई है कि उसके उद्देश्य क्या हैं। फ़रमाते अलैहिस्सलाम हैं

"नदवा अगरचे पालीटकस से बिल्कुल अलग है लेकिन चूँकि उसका असली उद्देश्य रोशन ख़्याल उल्मा का पैदा करना है और इस किस्म के उल्मा का एक ज़रूरी फ़र्ज़ यह भी है कि गर्वनमैंट की बरकात-ए-हुकू-मत से वाक़िफ़ हूँ और मुल्क में गर्वनमैंट की वफ़ादारी के ख़्यालात फैलाएं।"

हज़रत ख़लीफ़ मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

"यह है जिसे अंग्रेज़ी में कहते हैं "Cat is out of the bag" कि बलि थैलेसे बाहर आगई। तो ये उनकी हालत है। कैसे झूठ और मकर के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत अहमदिया पर हमले करते हैं परंतु अपना अंदरूना छुपाते हैं जिसे उन्होंने ख़ुद तस्लीम किया है और बताया है कि उद्देश्य क्या हैं? किस ने बुनियाद रखी? ये सारे सबूत तारीख़ी तौर पर मौजूद हैं किसी अहमदी का इस में कोई दख़ल नहीं और न ही कोई राय क़ायम करने की ज़रूरत है। यह एक तारीख़ी हक़ीक़त है कि जिसे तहरीक -ए-नजदीयत कहा जाता है उसे मुसलसल अंग्रेज़ की हिमायत हासिल रही है और उनके वे मुआहिदे तारीख़ की किताब में छिपे हुए मौजूद हैं जिनकी असल तहरीरात यहां लंदन की लाइब्रेरियों में मौजूद हैं और उनमें आप मुलाहिज़ा कर सकते हैं कि अंग्रेज़ों ने बाक़ायदा मुआहिदा करके अहल-ए-हदीस की तहरीक अर्थात वहाबी तहरीक और मौजूदा सऊदी हुकूमत के संस्थाप का आपस में एक ताल्लुक़ क़ायम करवाया और जिहाद की एक मूवमैंट चलवाई। अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ नहीं, वे तो उनका सरबराह था और उन्हें पाँच हज़ार पाऊंड की सालाना मदद भी दे रहा था। तो वह जिहाद की मूवमैंट किस के ख़िलाफ़ चलाई थी? वे तुर्की की मुस्लमान हुकूमत के थी।

(ख़ुतबात-ए-ताहिर भाग 4 ख़ुतबा जुमा 1 फ़रवरी 1985 से उद्धृत, हवालों पर तबसरा भी हुज़ूर रहमहुल्ला का है :

हमने मुतअद्दिद हवाले पेश किए कि किस तरह ग़ैर अहमदी उल्मा अंग्रेज़ी सलतनत की तारीफ़ में क़सीदे पढ़ते रहे। और उनसे फ़ायदे हासिल करते रहे। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो कुछ कहा हक़ के तौर पर कहा और आप कभी कोई फ़ायदा गर्वनमैंट से हासिल नहीं किया। अगर अंग्रेज़ों ने आप अपने साथ मिला कर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ साज़िश की थी तो साबित करना चाहिए कि अंग्रेज़ों ने आप अलैहिस्सलाम को क्या फ़ायदा पहुंचाया। झूठो का काम सबूत देना नहीं होता महिज़ लफ्फ़ाज़ी होती है। अख़बार मुंसिफ़ के ऐडीटर ने सिर्फ लफ्फ़ाज़ी की है। अल्लाह उन्हें अक़ल दे। आइन्दा शुमारा में हम इस इल्ज़ाम का उत्तर देंगे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अंग्रेज़ों से जिहाद के मुनकिर थे। (मंसूर मसरूर)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 12 October 2023 Issue No. 41

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

"मुझ को काफ़िर कह के अपने कुफ़्र पर करते हैं मोहर
यह तो है सब शक्ल उनकी हम तो हैं आईना दार"

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की कविता)

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा पर अख़बार मुंसिफ़ हैदराबाद के आरोपों का उत्तर

(भाग - 4)

पिछले तीन अंकों से हम अख़बार "मुंसिफ़" हैदराबाद के ऐडीटर का, जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम पर आरोपों का उत्तर दे रहे हैं। आरोप की तफ़सील और उसकी पृष्ठभूमि 17 अगस्त के शुमारा में देखी जा सकता है। मुंसिफ़ ने एक एतराज़ यह किया है कि सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने अंग्रेज़ों के साथ मिल कर साज़िश की थी। नऊज़ुबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। हमने दलायल और सबूतों के साथ यह साबित कर दिया कि ये एतराज़ महिज़ एक खोखला, झूठा, बे बुनियाद और इंतेहाई अहमक़ाना एतराज़ है। अब हम इस एतराज़का एक और पहलू से उत्तर देते हैं। कहा यह जाता है कि मिर्ज़ा साहिब ने अंग्रेज़ी हुकूमत की तारीफ़ की और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद करने से मना फ़रमाया।

यह बिल्कुल दरुस्त है कि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने अंग्रेज़ी हुकूमत की प्रशंसा की और हुकूमत के ख़िलाफ़ जिहाद के नाम पर बग़ावत, सरकशी और क़तल-ओ-ग़ारत से मना फ़रमाया। अल्लाह तआला ने आप मसीह-ओ-महदी के अज़ीमुश्शान मन्सब से सरफ़राज़ फ़रमाया था । आप अलैहिस्सलाम का मंसबी था कि इस्लाम की खोई हुई अज़्मत को पुनः पूरी दुनिया में क़ायम करें और इस का ज़िंदा मज़हब होना और इस के रसूल का ज़िंदा रसूल होना और इस की किताब का ज़िंदा किताब होना और क़यामत तक के लिए होना दलायल-ओ-बराहीन से साबित करें। उस के लिए एक ऐसी हुकूमत की ज़रूरत थी जहां आप पूरी आज़ादी के साथ तब्लीग़-ओ-इशाअत का काम कर सकें। अतः अल्लाह तआला की हिक्मत और उसकी मस्लेहत ने आप अलैहिस्सलाम को सलतनत अंग्रेज़ी में पैदा किया जिस के अधीन आपने तब्लीग़-ओ-इशाअत का हक़ ख़ूब अदा किया। इस आज़ादी के साथ दुनिया के किसी भी क्षेत्र में आप अलैहिस्सलाम का इस्लाम की तब्लीग़-ओ-इशाअत का काम नहीं कर सकते थे। इस लिहाज़ से आप अलैहिस्सलाम ने गर्वनमैंट अंग्रेज़ी की बहुत तारीफ़ फ़रमाई कि उसने अपनी प्रजा के साथ निहायत अदल-ओ-इन्साफ़ का व्यवहार किया, मज़हबी आज़ादी के साथ साथ तब्लीग़-ओ-इशाअत का भी पूरा पूरा हक़ दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"कुछ नादान मुझ पर एतराज़ करते हैं जैसा कि साहिब अल् मिनार ने भी किया कि ये शख़्स अंग्रेज़ों के मुल्क में रहता है इस लिए जिहाद की मुमानअत करता है यह नादान नहीं जानते कि अगर मैं झूठ से इस गर्वनमैंट को ख़ुश करना चाहता तो मैं बार-बार क्यों कहता कि ईसा बिन मर्यम सलीब से निजात पा कर अपनी मौत तिब्बी से बमुक़ाम श्रीनगर कश्मीर मर गया और न वह ख़ुदा था और न ख़ुदा का बेटा। क्या अंग्रेज़ मज़हबी जोश वाले मेरे इस फ़िक़रा से मुझ से बेज़ार नहीं होंगे? अतः सुनो हे नादानों में इस गर्वनमैंट की कोई ख़ुशामद नहीं करता बल्कि असल बात यह है कि ऐसी गर्वनमैंट से जो दीन-ए--इस्लाम और दीनी रसूम पर कुछ दस्त अंदाज़ी नहीं करती और न अपने दीन को तरक़्क़ी देने के लिए हम पर तलवारें चलाती है क़ुरआन शरीफ़ की दृष्टि से जंग मज़हबी करना हराम है क्योंकि वह भी कोई मज़हबी जिहाद नहीं करती और उनका शुक्र करना हमें इस लिए लाज़िम है कि हम अपना काम मक्का और मदीना में भी नहीं कर सकते थे परंतु उनके मुल्क में। यह ख़ुदा की तरफ़ से हिक्मत थी कि मुझे इस मुल्क में पैदा किया अतः क्या मैं ख़ुदा की हिक्मत की कसर-ए-शान करूँ ख़ुदा ने मुझे इस गर्वनमैंट के ऊंचे टीले पर जहां मुफ़्सेदीन का हाथ नहीं पहुंच सकता जगह दी जो आराम की जगह है और इस मुल्क में सच्चे उलूम के चश्मे जारी हैं और मुफसिदों के हमलों से अमन और क़रार है फिर क्या वाजिब नहीं था कि हम इस गर्वनमैंट के एहसानात का शुक्र करते।"

(कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 75 हाशिया)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं झूठ से इस गर्वनमैंट को ख़ुश करना नहीं चाहता। अगर ऐसा होता तो मैं इन के ख़ुदा यसू को वफ़ात याफताह क्यों क़रार देता, ज़ाहिर है कि इस से उन को तकलीफ़ ही हुई होगी। अतः आप अलैहिस्सलाम ने जो कुछ कहा हक़ के इज़्हार के लिए और इस्लामी तालीम के मुताबिक़ कहा।" यह तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मत था लेकिन वे लोग

शेष पृष्ठ 10 पर

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

اب دیکھتے ہو کیا رجوع جہاں ہوا — اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad